28.
CC-0. Prof. Satya Vrat

'Master' Manimala series No. 90 (Ayurveda Sec. 2)

THE

Vaidya Jeevana

OF

Shri Lolimmaraja.

Translated into Hindi
BY

Pt. Pavani Prasad Sharma,
AYURVEDACHARYA.

Edited By

Shri Mannalal Abhimanyu M. A.

Published by
Master Khelarilal & Sons.,
Sanskrit Book Depot,
Kachaurigali, Benares City.

1937

Price 10 Annas.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

'Master' Manimala series No. 90 (Ayurveda Sec. 2)

THE
Vaidya Jeevana

OF

Shri Lolimmaraja.

Translated into Hindi
BY
Pt. Pavani Prasad Sharma,
AYURVEDACHARYA.

Edited By
Shri Mannalal Abhimanyu M. A.

Published by
Master Khelarilal & Sons.,
Sanskrit Book Depot,
Kachaurigali, Benares City.

1937

Price 10 Annas.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

'मास्टर' मणिमालायाः ९० संख्यको मणिः (आयुर्वेदविभागे २)

श्रीलोलिम्मराजविरचितम्

वैद्यजीवनम् ।

आयुर्वेदाचार्येत्युपाधिधारिणा—

पं० श्री पावनीप्रसादशर्म्मणा

विरचितया हिन्दीटीकया

संवलितम् ।

—:*:—

श्रीमन्नालाल अभिमन्यु एम० ए०,

इत्यनेन संशोधितम् ।

तच्च

काशीस्थ 'संस्कृत बुकडिपो' इत्यस्याधिपैः—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स इत्येतैः

'मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स' नाम्नि मुद्रणागारे

मुद्रापयित्वा प्रकाशितम् ।

मूल्यं दशाणकाः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

प्रस्तुत पुस्तक आयुर्वेद के एक महान् विद्वान् तथा सत्कवि की रचना है। लेखक की विद्वत्ता तथा गुणगरिमा से वैद्यसमाज पूर्ण परिचित है। इसमें सन्देह नहीं कि यह ग्रन्थ आयुर्वैदिक साहित्य में अपने ढंग का अनोखा है। पाठकों को हृदयङ्गम कराने के लिये लेखक ने अपने भावों को सुन्दर तथा आकर्षक उपमाओं द्वारा इस ग्रन्थको सुशोभित किया है।

लोलिम्मराज के ग्रन्थ में एक श्रेष्ठ काव्य की भाँति सब गुण मौजूद हैं। एक २ श्लोक में अनूठे प्रयोग भरे पड़े हैं। दुःख से पीड़ित मनुष्य भी इस ग्रन्थ को एकबार पढ़ कर आनन्द के सागर में गोते लगाने लगता है। ग्रन्थकार ने शब्दों का चुनाव भी बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। उपमाओं के देने में ग्रन्थकार ने अच्छे २ कवियों को भी लज्जित कर दिया है। यह पुस्तक साहित्यप्रेमी वैद्यों के लिये बड़े काम की है।प्रयोगों का संकलन भी बड़ी बुद्धिमत्ता से हुआ है। इस ग्रन्थ में कोई ऐसा प्रयोग नहीं है जो रामबाण न हो।

अब तक यह पुस्तक प्राचीन शैली के अनुसार छपी थी। यही कारण है कि नवीन वैद्यों में प्राचीनों की अपेक्षा इसका प्रचार कम हुआ। हर्ष का विषय है कि काशी के प्रसिद्ध पुस्तकव्यवसायी "मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स" फर्म के सञ्चालक महोदयों ने आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकोंको नवीन शैली में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं और उन्हीं की आज्ञानुसार मैंने इस पुस्तक की सरल तथा संक्षिप्त टीका करनेका भी प्रयत्न किया है जो वैद्यसमाजके सन्मुख है। इसकी टीका अपने प्रिय वैद्येश्वरों के करकमलों में समर्पित करता हुआ मैं अपनी त्रुटियों के लिये उनसे क्षमा प्रार्थी हूँ।

अजमेर,
अनन्तचतुर्दशी
सम्वत् १९९४

विदुषामनुचरः—
वैद्यपावनीप्रसाद शर्मा
आयुर्वेदाचार्य।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

अनुक्रमणिका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

—:※:—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

* श्रीधन्वन्तरये नमः *

लोलिम्मराजरचितं

वैद्यजीवनम् ।

भाषाटीकासहितम

प्रकृतिसुभगगात्रं प्रीतिपात्रं रमाया
दिशतु किमपि धाम श्यामलं मङ्गलं वः ।
अरुणकमललीलां यस्य पादौ दधाते
प्रणतहरजटालीगां गिरिङ्गत्तरङ्गैः ॥१॥

भा० टी०—कोटि कामदेवों की शोभा के समान, अपनी स्वाभाविक छटा से शोभायमान और लक्ष्मी का प्रीति पात्र साथ ही जिसके चरणों से उद्भूत हुई गंगा को महेश्वर ने भी सनम्र हो धारण किया है और जिसके पद कमल पटल अरविन्द की शोभा को धारण करते हैं अतसी पुष्प के समान श्यामल ऐसे भगवान विष्णु आप लोगों का कल्याण करें ॥१॥

रत्नं वामदृशां दृशां सुखकरं श्रीसप्तशृङ्गास्पदं
स्पष्टाष्टादशबाहुतद्भगवतो भर्गस्य भाग्यं भजे ।
यद्भक्तेन मया घटस्तनिघटी मध्ये समुत्पाद्यते
पद्यानां शतमङ्गनाधरसुधास्पर्द्धाभिधानोद्धरम् ॥२॥

भा० टी०—सुन्दरियों के नयनों को आनंददायक और उनमें श्रेष्ठ, साथ ही हिमालय पर रहने वाले और अष्टादश भुजा वाले, पार्वती स्वरूप भगवान महादेव के भाग्य को मैं सादर नमस्कार करता हूँ जिसका दास मैं लोलिम्बराज भी उसके कृपा कटाक्ष से सैकड़ों पद्यों से अमृत निकालने के लिए एक घड़ी में समर्थ हुआ हूँ ॥२॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

दिवाकर[1]प्रसादेन रोगारोग्यसमीहया ।
समासेन वयं कुर्म्मः काव्यं सद्वैद्यजीवनम् ॥३॥

भा० टी०—सूर्य्य भगवान् की परम कृपा से अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित रोगियों के आरोग्य की इच्छा करता हुआ मैं वैद्यजीवन नामक काव्य को संक्षेप में लिखता हूँ ॥३॥

तथापि क्रियते ग्रन्थः सन्ति यद्यपि दुर्जनाः ।
न हि दस्युभयाल्लोको दैन्यवानिह वर्तते ॥४॥

भा० टी०—यद्यपि संसार में दूसरों का अपवाद करने वाले लोग मौजूद हैं फिर भी मैं इस ग्रंथ को लिखता हूँ क्योंकि लोक में जो व्यक्ति सावधान हैं, उन्हें चोरों का भय नहीं है। उसी भांति इस सुंदर काव्य को लिखते समय मुझे दुष्टों का भय नहीं है ॥४॥

गदगञ्जनाय चतुरैश्चरकाद्यै—
मुनिभिर्नृणां करुणया कथितं यत् ।
अखिलं लिखामि खलु तस्य रहस्यं
स्वकपोलकल्पितमिहास्ति न किञ्चित् ॥५॥

भा० टी०—रोगों को नष्ट करने के लिये चरकादि महर्षियों ने मनुष्यों पर दया करते हुए जो वैद्यक शास्त्र लिखा है, उसी ऋषि प्रणीत आयुर्वेद शास्त्र के सारभाग को मैं यहां लिखता हूँ। इसमें मेरा कपोलकल्पित अर्थात् मनगढन्त कुछ भी नहीं है ॥५॥

येषां न चेतो ललनासु लग्नं
मग्नं न साहित्यसुधासमुद्रे ।
ज्ञास्यंति ते किं मम हा प्रयासा-
नन्धा यथा वारवधूविलासान् ॥ ६ ॥

भा० टी०—जिनका चित्त स्त्रियों में अनुरक्त नहीं है और न जिन्होंने साहित्य सुधा का ही पान किया है वे मनुष्य मेरे उस परिश्रम को, जो

[1] दिवाकर ग्रन्थकर्ता के पिता का भी नाम है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

मुझे इस ग्रंथ के निर्माण में हुआ है नहीं जान सकते। जिस प्रकार अन्धे मनुष्य वेश्याओं के हाव भाव कटाक्षादिकों को नहीं जानते हैं ॥६॥

(वैद्यलक्षणम्)

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः पीयूषपाणिः कुशलः क्रियासु।
गतस्पृहो धैर्य्यधरःकृपालुः शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशःस्यात्

भा० टी०—जिन्होंने आयुर्वेद के विद्वानों के पास अष्टांग आयुर्वेद को विधि पूर्वक पढ़ा है, जिसके हाथों में अमृत है अर्थात् रोगी को जो कुछ दे देते हैं वही लाभ करता है, जो क्रिया कुशल हैं अर्थात् जिन्हें औषधि निर्माण तथा चिकित्सा का अनुभव है, जिन्हे धन उपार्जन करने की इच्छा नहीं है अर्थात् लोभी नहीं हैं, जो रोगी को धैर्य्य देने वाले हैं और रोगियों पर दया रखने वाले हैं, पवित्रता से रहते हैं, इन गुणों से युक्त वैद्य चिकित्सा करने के अधिकारी हैं ॥७॥

आदौ निदानविधिना विदध्याद्व्याधिनिश्चयम् ।
ततः साध्यं परीक्षेत पश्चाद्भिषगुपाचरेत् ॥८॥

भा० टी०—वैद्य को चाहिये कि प्रथम निदानादि पंच प्रकार से रोग की परीक्षा करे, पश्चात् साध्यासाध्य की, जब यह विदित हो जावे कि रोग साध्य है तभी उसकी चिकित्सा करे, अन्यथा नहीं ॥८॥

औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीड़िताः ।
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥९॥

भा० टी०—रोगियों को चाहिये कि वे अपठित वैद्य अर्थात् जिन्होंने अष्टांगायुर्वेद को नहीं पढ़ा है ऐसे वैद्यों का इलाज छोड़ दें। जिस प्रकार सज्जन पुरुष परपुरुष की अभिलाषा रखने वाली स्त्री को छोड़ देते हैं ॥९॥

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ? ॥१०॥

भा० टी०—रोगी के पथ्य सेवन न करने पर औषधि सेवन से कोई लाभ नहीं। आचार्य्य चरकने लिखा है "विनापि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्तते। न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि" अर्थात् पथ्यसेवी मनुष्य विना औषधि के केवल पथ्य से ही स्वस्थ हो सकता है। जो रोगी पथ्य

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

का पालन नहीं करता उसे चाहे सैंकड़ों औषधियां क्यों न दी जावें कोई लाभ नहीं हो सकता ॥१०॥

इह गमिष्यति वैद्यमतिः श्रमं
प्रथममेव पुनस्तु महासुखम् ।
प्रियतमस्य मृगाक्षि ! समागमे
नवकरग्रहणा गृहिणी यथा ॥११॥

भा० टी०—हे मृगों के समान नेत्रवाली ! इस ग्रंथ को पढ़ते समय तो वैद्यों को श्रम होगा । पर भली प्रकार अर्थ समझने पर बहुत आनंद आवेगा । जिस प्रकार नवविवाहिता स्त्री को प्रथम समागम में कष्ट होता है और फिर नहीं ॥११॥

अथ ज्वरप्रतीकारमाह—

यतः सर्वेषु रोगेषु प्रायशो बलवान् ज्वरः ।
अतस्तस्य प्रतीकारं प्रथमं ब्रूमहे वयम् ॥१२॥

भा० टी०—प्रायः सब रोगों में ज्वर ही सबसे बलवान् है । इसलिये सबसे प्रथम ज्वर का ही उपाय लिखते हैं ॥१२॥

अधुना शृणु तन्वि ! लङ्घनं ज्वरितानां प्रथमं प्रशस्यते ।
सुरपादपधान्यधावनीयुगविश्वौषधपाचनं ततः ॥१३॥

भा० टी०—हे तन्वि ! जो ज्वर से पीड़ित हैं, उन्हे प्रारम्भ में लंघन बहुत उपयुक्त है । पश्चात् ज्वर के पाचन के लिये देवदारु, धनियाँ, दोनों कटेरी, सोंठ इनको समान भाग ले क्वाथ बनाकर देना चाहिये । मात्रा-क्वाथ द्रव्य, ४ तोले की मात्रा उत्तम, ३ तोले की मध्यम, और २ तोले की अधम मानी गई है ॥१३॥

छिन्नौषधाम्भोधरधन्वयासैः
किराततिक्ताम्बुदरेणुयासैः ।
विश्वावृषाम्भोधरधन्वयासैः
क्वाथो मरुत्पित्तकफज्वरेषु ॥१४॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—वात ज्वर में गिलोय, सोंठ, मोथा, जवासा, इनका क्वाथ देना चाहिये । पित्त ज्वर में चिरायता, कुटकी, नागर मोथा, पित्तपापड़ा और जवासा इनका क्वाथ दे । कफ ज्वरमें सोंठ, अडूसा, नागरमोथा और जवासा इनका क्वाथ देना चाहिये ॥१४॥

वातज्वरचिकित्सा—

पीयूषलोकपार्श्वालीचरणानां कषायकः ।
पीयमानः प्रिये ! हन्ति हनुमज्जनकज्वरम् ॥१५॥

भा० टी०—हे प्रिये ! गिलोय, सोंठ, पीपलामूल, इनका क्वाथ पीने से वायु का ज्वर नष्ट होता है ॥१५॥

उशीरकलशीमहौषधकिरातकाम्भोधर-
स्थिराबृहतिकाद्वयामृतलतात्रिकण्टैः कृता ।
कषायकममुं पिबेत् पवनजः ज्वरव्याकुलः
पुमान्दशशतच्छदच्छदमदग्रसल्लोचने ॥१६॥

भा० टी०—हे सुंदरनयनवाली ! वात ज्वर से पीड़ित मनुष्य को खश, पृष्णपर्णी, सोंठ, चिरायता, नागरमोथा, शालपर्णी, दोनों कटेरी, गिलोय, गोखरु, इनका क्वाथ देने से तुरंत लाभ होता है ॥१६॥

वातपित्तज्वरचिकित्सा—

छिन्नोद्भवा पर्पटवारिवाहभूनिंबशुंठीजनितः कषायः ।
समीरपित्तज्वरजर्जराणां करोति भद्रं खलु पंचभद्रः॥१७॥

भा० टी०—गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता, सोंठ, इस पंच भद्र नामक क्वाथ के प्रयोग से वातपित्त ज्वर दूर होता है ॥१७॥

अथ पित्तज्वरचिकित्सामाह—

मृगमदविलसल्ललाटमध्ये मृगमदहारिणि! लोचनद्वयेन ।
मृगनृपतितनूदरश्रि ! पित्तज्वरमहहथाति रैणवःकषायः ॥

भा० टी०—हे सुंदरललाटवाली ! सुंदर नेत्र वाली ! सिंह के समान सूक्ष्म उदर वाली ! पित्त ज्वर को दूर करने के लिए पित्तपापडे का अकेला ही क्वाथ काफी है ॥१८॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

एक एव खलु पैत्तिकज्वरं
हन्ति पर्पटकृतः कषायकः ।
चन्दनोदकमहौषधान्वित-
श्चेत्तदा किमु पुनर्विचारणाम् ॥१६॥

भा० टी०—केवल पित्तपापड़े का ही क्वाथ पित्त ज्वर को नष्ट करने में समर्थ है, फिर उसमें लाल चंदन, नेत्रवाला, सोंठ और मिला दिये जावें तब तो बात ही क्या ? अर्थात् पित्त ज्वर बहुत शीघ्र नष्ट होगा ॥१६॥

द्राक्षापर्पटराजवृक्षकटुकामुस्ताभयानां जलं
मूर्च्छाशोषनिदाघतृड्भ्रलपनभ्रान्त्याढ्यपित्तज्वरे ।
दुस्पर्शप्रमदाकिरातकटुकासिंहास्यरेणूद्भवः क्वाथः-
शर्करयान्वितो हरति तृद्दाहास्रपित्तज्वरान् ॥२०॥

भा० टी०—दाख, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी, नागरमोथा, इन से सिद्ध किये हुए क्वाथ के सेवन से मूर्च्छा, शोष, पसीना आना, प्यास, बकवाद करना, भ्रांति आदि उपद्रवों से युक्त पित्त ज्वर नष्ट होता है ॥२०॥

अहो किमर्थं बहुभिः कषायैः
पाराशराद्यैर्मुनिभिः प्रदिष्टैः ।
छिन्ना शिवा पर्पटतोयपानात्
पित्तः ज्वरः किं न सरीसरीति ? ॥२१॥

भा० टी०—पाराशरादि आचार्य्यों द्वारा निर्मित अनेकों क्वाथों का क्या प्रयोजन है ? जब कि गिलोय, आंवला, पित्तपापड़ा इनका ही क्वाथ पित्त ज्वर को जड़ से नष्ट कर देता है ॥२१॥

लोहितचन्दनपद्मकधान्य-
च्छिन्नरुहापिचुमन्दकषायः ।
पित्तकफज्वरदाहपिपासा
वान्ति हुताशविनाशहरः स्यात ॥ २२ ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—लाल चंदन, पद्मकाष्ठ, धनियाँ, गिलोय और नीम की छाल इनका काढ़ा पीने से जलन, प्यास, उलटी और मंदाग्नि इन उपद्रवों से युक्त पित्त-कफ ज्वर दूर होता है ॥२२॥

जलजलजजलवाहरेणुविश्वौ-
षधशिशिरैः शिशिरं जलं शृतं स्यात् ।
सपदि सुखकरं सदाहज्वरतृषि
योज्यमिदं नवज्वरेऽपि ॥ २३ ॥

भा० टी०—नेत्रवाला, खश, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठ, लाल चंदन, इनसे सिद्ध किए हुए क्वाथ को ठंडा करके पिलाने से दाह और तृष्णा से युक्त पित्त ज्वर दूर होता है। यही क्वाथ नये ज्वर में देने से लाभ करता है ॥२३॥

सहस्रधौतेन घृतेन कर्तुरभ्यङ्गयोगः कृशतां बिभर्ति ।
अन्याङ्गनासङ्गमसादरस्य स्वीयेषु दारेषु यथाऽभिलाषः॥

भा० टी०—हजार वार धुला हुआ घी-मालिश करने से दाह जन्य दुर्बलता को इस तरह नष्ट कर देता है जिस तरह पर-स्त्री में अनुराग रखने वाला मनुष्य अपनी स्त्रीकी अभिलाषाओं को नष्ट कर देता है ॥ २४ ॥

अमलैः कमलैरथानिलैरलसैः पुष्परसैः समन्वितैः ।
जलकेलिकथाकुतूहलैरपि पित्तज्वरजारुजो जयेत् ॥२५॥

भा० टी०—सुंदर विकसित कमलों का देखना, जिन पर भौंरे रसपान कर रहे हों, शीतल मंद सुगंधित वायु का सेवन, जल की क्रीड़ा अर्थात् एक का दूसरे पर पानी फेंकना उसे देखना अथवा नाव में बैठ कर नदी की सैर करना अनेक प्रकार की कथाओं तथा विस्मयादि बोधक बातों को सुनना, इन सब उपायों से पित्त ज्वर से उत्पन्न हुआ दाह तथा प्यास दूर होती है ॥२५॥

श्रीखण्डमण्डितकलेवरवल्लरीणां
मुक्ताफलाकुलविशालकुचस्थलीनाम् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

वैदग्ध्यमुग्धवचसां सुविलासिनीना-
मालिंगनं सकलदाहमपाकरोति ॥२६॥

भा० टी०—जिनका शरीर चंदन से सुशोभित हो, जिनके कुच सुंदर मोतियों की माला से आच्छादित हों, जो मीठी मीठी रस भरी बातें कर रही हों, जो स्त्रियां हाव भाव आदि में निपुण हों ऐसी स्त्रियों के आलिंगन से पित्तज्वर में उत्पन्न होने वाली दाह नष्ट होती है ॥२६॥

शय्या पल्लवपद्मपत्ररचिता वासो वयस्यैः समम्
कांतारे कुसुमस्फुरुतरुवरे वीणान्वितं गायनम् ।
आलापाश्च शुकालिकोकिलकृताः कांताश्च कान्ता कथा
वाताश्चामलबालकव्यजनजा दाघं निराकुर्वते॥२७॥

भा० टी०—कमल अथवा कदली के पत्रों से निर्मित शय्या पर शयन, नाना प्रकार के सुगंधित पुष्पों से शोभित वन में भ्रमण, वीणा युक्त गायन, सुंदर पक्षियों (कोकिल, तोता) का आलाप, भौंरे की मधुर २ गुँजार, सुंदर वाग्चतुर स्त्रियों के साथ संभाषण, सुंदर खश के बने हुए पंखे, ये सब साधन गरमी को नष्ट करते हैं ॥२७॥

तृड्दाहमोहाः प्रशमं प्रयाति
निम्बप्रवालोत्थितफेनलेपात् ।
यथा नराणां धनिनां धनानि
समागमाद्वारविलासिनीनाम् ॥२८॥

भा० टी०—नीम के पत्तों को कूट कर निचोड़े, फिर उसे मथे, उसमें जो झाग आवें उनका लेप करने से प्यास, दाह तथा मोह आदि नष्ट होते हैं। जैसे धनी पुरुष वेश्याओं के सम्पर्क में रह कर अपनी गाढ़ी कमाई को नष्ट करते हैं ॥२८॥

अय नितंबिनि ! गायनलालसे !
मधुरचारिणि ! काममदालसे !
हरति दाहमघर्मकरानने !
हिमहिमांशुजलैरनुलेपनम् ॥२९॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे विशाल नितम्ब स्थलवाली! गायन की अभिलाषिणी! हंस गामिनि! चंद्रमाके समान मुख वाली,! चंदन, कपूर, नेत्रवाला इनको जल में पीस कर लेप करने से दाह नष्ट होता है ॥२९॥

शुभ्राभ्रविभ्रमधरे शशांककरसुन्दरे ।
चन्दनैश्चर्चिते हर्म्ये स्वापस्तापमपोहति ॥३०॥

भा० टी०—जिस समय आकाश स्वच्छ हो, मेघ आदि न हों, चंद्रमा की किरणों से जगत् सुशोभित हो उस समय आंगन में खाट बिछा कर, उसे चंदन के जल से भिगो कर शयन करने से भयानक से भयानक दाह नष्ट होती है ॥३०॥

पित्तज्वरे किं रसफाण्टलेपैः
किं वा कषायैरमृतेन किं वा ?
पेयं प्रियाया मुखमेकमेव
लोलिम्मराजेन सदानुभूतम् ॥ ३१ ॥

भा० टी०—हे रति की इच्छा वाली! पित्त ज्वर में स्वरस, फांट तथा सुलेप, काढ़ा, ठंडा पानी आदि को छोड़ कर अपनी प्रियतमा के अधरामृत (सुंदर ओष्ठ) का पान करें यह लोलिम्मराजका हमेशा का अनुभूत है॥३१॥

यदि पर्युषितं धान्यसलिलं सितया समम् ।
प्रभातसमये पीतमन्तर्दाहं नियच्छति ॥३॥

भा० टी०—यदि अंतर्दाह हो अर्थात् शरीर के भीतर ज्वाला सी उठती हो तो, रातको जलमें धनियां भिगोकर प्रातः उसमें शक्कर मिला कर पिलावें, इससे अंतर्दाह शीघ्र दूर होता है ॥३२॥

वातपित्तज्वरचिकित्सा—

पञ्चमूल्यमृतामुस्ताविश्वभूनिम्बसाधितः ।
कषायः शमयत्याशु वायुमायुभवं ज्वरम् ॥३३॥

भा०टी०—लघुपंचमूल, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता इन सब द्रव्यों से सिद्ध किया काढ़ा वात और पित्त दोनों दोषों से उत्पन्न हुए ज्वर को नष्ट करता है ॥३३॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

श्रृङ्गीकणाकट्फलपुष्कराणां
क्षौद्रान्वितानां विहितोऽवलेहः ।
श्वासेन कासेन युतं बलास-
ज्वरं जयेदत्र न कापि शंका ॥ ३४ ॥

भा० टी०—कांकड़ासिंगी, पीपल, कायफल, पोहकर मूल, और शहद इनसे सिद्ध किया हुआ अवलेह श्वास और खांसी से युक्त जो कफ ज्वर है, उसे नष्ट करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥

भार्ङ्गीगुडूचीघनदारुसिंही
सुण्ठीकणा–पुष्करजः कषायः ।
ज्वरं निहन्ति श्वसनं क्षिणोति
क्षुधां करोति प्ररुचिं तनोति ॥३५॥

भा० टी०—भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, देवदारु, बड़ी कटेरी, सोंठ, पीपल, पोहकरमूल इनका क्वाथ पीने से ज्वर नष्ट होता है, स्वांस दूर होता है, भूख बढ़ती है, भोजनकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥३५॥

ममद्वयं विस्मयमातनोति तिक्ताकषायो मुखतिक्तकाघ्नः
निपीडितोरोजसरोजकोषा योषा प्रमोदं प्रचुरंप्रयाति॥३६॥

भा० टी०—हे प्यारी ! मेरी दो बातें आश्चर्य्यजनक मालूम होंगी—पहिली बात यह कि कुटकी का क्वाथ ज्वर में उत्पन्न हुए मुंह के कड़वे-पनको दूर करता है। और दूसरी बात यह कि स्त्री के कुचों को हाथों से पीड़ित करने पर वह बहुत प्रसन्न होती है ॥३६॥

क्वाथः कट्फलकत्तृणाब्दधनिकाशृङ्ग्युग्रगन्धाभया
भार्ङ्गीपर्पटविश्वदेवतरुजो वाह्लीकमध्वन्वितः ।
कासश्वासमुखामयज्वरबलं श्लेष्मप्रकोपं हरेत्
तद्वत् कोमलकण्ठि!कण्ठजनितां पीडां च जेह्रीयते॥३७॥

भा० टी०—कायफल, कत्तृण (पौरोहिस तृण), नागरमोथा, धनियां, कांकड़ासिंगी, बच, पंच रेखा वाली हरड़, भारंगी, पित्त पापड़ा, सोंठ, देव-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

दारू इन ग्यारह औषधियों का क्वाथ कर, उसमें हींग,और शहद मिलाकर पीने से हे कोमल कण्ठवाली ! खांसी, श्वास, मुँह के रोग, ज्वर, कफ की वृद्धि, कंठ की पीड़ा ये सब रोग दूर होते हैं ॥३७॥

अरुचिं द्यति लुङ्गकेसरं सघृतं सैन्धवचूर्णमिश्रितम् ।
रुचिमम्बुरुहस्य तन्वि ! ते नयनं खञ्जनगञ्जनं यथा॥३८॥

भा० टी०—हे तन्वि ! यदि बिजौरा नीबू को केसर की चूर्ण, घी और सेंधा नमक मिला कर सेवन किया जावे तो वह अरुचि को नष्ट करता है। जैसे खञ्जन (पक्षि विशेष) के मद को नष्ट करने वाले तेरे ये सुन्दर नेत्र, कमल की शोभा को, नष्ट कर देते हैं ॥३८॥

अथ सन्निपातज्वरचिकित्सामाह—

ग्रन्थीन्द्रजाऽमरपुरक्रमिशत्रुभार्ङ्गी-
भृङ्गत्रिकटुवनलकट्फलपौष्कराणाम् ।
रास्नाभयाबृहतिकाद्वयदीप्य भूत-
केशी किरातकबचाचविकाबृकीणाम् ॥ ३९ ॥
क्वाथो हन्यात्सन्निपातान्समस्तान्
बुद्धिभ्रंशस्वेदशैत्यप्रलापान् ।
शूलाध्मानं विद्रधिश्लेष्मवातान्
वातव्याधिं सूतिकानां च तद्वत् ॥ ४० ॥

भा० टी०—पीपलामूल, इन्द्रजौ, सेहुंड़, देवदारु, गूगल, वायविडंग, भारंगी, दालचीनी, सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, कायफल, पोहकरमूल, रासना, हरड़, दोनों कटेरी, जटामांसी, चिरायता, बच, चव, पाठा, इन औषधियोंका काढ़ा पीनेसे सब प्रकारके सन्निपात,बुद्धिभ्रंश,पसीना आना, शीतांग प्रलाप (बड़बड़ाना), पेटमें दर्द तथा पेटका फूलना, विद्रधि, कफ-युक्त वायु, वात व्याधि तथा प्रसूति रोग आदि सब दूर होते हैं ॥ ३९-४०.

अर्कानन्ताकिरातामरतरुरसनासिन्दुवारोग्रगंधा-
तर्कारीशिग्रुपञ्चोषणघुणदयितामार्कवाणां कषायः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

सद्यस्तीव्रांस्त्रिदोषानपहरति धनुर्मारुतं दन्तबन्धं
शैत्यंगात्रे च गाढं श्वसनकसनकं सूतिकावातरोगान् ४१

भा० टी०—आककी जड़, अनन्त मूल, चिरायता, देवदारु, रासना, संभालू, घुड़वच, अरनी, सहँजना, पीपला मूल, पीपल, वच, सोंठ, चीता, अतीस, भांगरा, इनके क्वाथके पीनेसे भयानक सन्निपात दूर होता है। धनुर्वात, दाँतोंका बन्द हो जाना, शीतांग, श्वास, खांसी, प्रसूताके रोग तथा सब प्रकारके वातरोग दूर होते हैं ॥४१॥

तिक्तातिक्तकपर्पटामृतसटीरास्नाकणापौष्करं
त्रायन्तीबृहतीसुरौषधशिवादुस्पर्शभार्ङ्गीकृतः।
क्वाथो नाशयति त्रिदोषनिकरं स्वापं दिवा जागरं
नक्तं तृण्मुखशोषदाहकशनं श्वासानशेषानपि ॥४२॥

भा० टी०—कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रासना, पीपल, पोहकरमूल, त्रायंती, कटेरी बड़ी, देवदारु, सोंठ, हरड़, जवासा, भारंगी, इनका क्वाथ सेवन करनेसे सब प्रकारके सन्निपात दूर होते हैं। दिनमें नींद आना, रातमें जागना, प्यास, मुंहका सूखना, दाह, खांसी और सब प्रकारके श्वास ये सब दूर होते हैं ॥४२॥

सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद् भेदो न विद्यते।
चिकित्सको जयेद्यस्तं तस्मात् कोऽस्ति प्रतापवान् ॥४३।

भा० टी०—सन्निपात ज्वर और मृत्यु इन दोनोंमें भेद नहीं है। जो वैद्य सन्निपात को नष्ट करता है उसके समान प्रतापी कोई नहीं है ॥४३॥

त्रिदोषाजगरग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्यराट् ।
आत्मापि तस्मै दातव्यः किं पुनः कनकादयः ॥४४॥

भा०टी०—त्रिदोष रूपी अजगर के मुंह से जो बचा सके वही श्रेष्ठ वैद्य है उसी को शरीर सौंपना चाहिये। धन दौलत की तो बात ही क्या ?

यः शोफः श्रुतिमूलजः सुकठिनः शान्ते त्रिदोषज्वरे
रक्तं तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पिः पिबेच्चातुरः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

रास्नानागरकुंगमूलहुतभुग्दार्व्यग्निमन्थैः समै-
र्लेपः स्यादरविन्दवन्द्यनयने ! शोथव्यथाध्वंसनः॥४५।

भा० टी०—हे कमलनयनि ! सन्निपात ज्वरके शान्त हो जाने पर यदि कर्णके मूलमें बहुत कठिन सूजन होवे तो जोंक लगवाकर रक्त निकलवा देना चाहिये । रोगी को घृत पिलाना चाहिये । रासना, सोंठ, बिजौरा नीबू की जड़, चीता, दारुहलदी, अरनी इनका क्वाथ पिलानेसे शोथ नष्ट हो जाता है ॥ ४५ ॥

अथ जीर्णज्वरस्य चिकित्सामाह—

शूलात्पार्श्वशिरःस्थितात्कसनतः श्वासाच्च जीर्णज्वरात्
मुक्तः स्यात्पुरुषः पयः परिपिबन् पञ्चांघ्रिणा पाचितम् ।
एकासौ गुडपिप्पली विजयते जीर्णज्वराऽजीर्णरुक्
क्षुन्मान्द्यारुचिपाण्डुजन्तुकसनश्वासान्किमन्यौषधैः॥४६।

भा० टी०—शालपर्ण्यादि पंचमूलका क्वाथ पीने से शिर का दर्द, खांसी, श्वास, और पुराना बुखार, दूर होता है। केवल गुड़ और पीपल के ही लेने से पुराना बुखार अजीर्ण, भूख लगना, अरुचि पाण्डु-रोग, कृमिरोग, खांसी और श्वास ये दूर होते हैं। फिर दूसरी औषधियों की तो बात ही क्या ? ॥४६॥

जीर्णज्वरं कफकृतं कणया समेत-
श्छिन्नोद्भवोद्भवकषायक एष हन्ति ।
रामो दशास्यमिव राम इव प्रलम्बं
रामो यथा समरमूर्द्धनि कार्तवीर्य्यम् ॥४७॥

परशुराम

भा० टी०—गिलोयका क्वाथ और पीपलका चूर्ण इनको पीनेसे कफ युक्त जो जीर्ण ज्वर है, वह दूर होता है। जैसे रामने रावण को मारा, राम (हलायुध) ने प्रलम्बासुर तथा राम(कार्त्तवीर्य्य)ने हैहय को युद्ध में मारा ४७

परशुराम ने हैहयों के अधीश्वर कार्तवीर्य को

पञ्चमूलीकषायस्य सकृष्णस्य निषेवणात् ।
जीर्णज्वरः कफकृतो विदधाति पलायनम् ॥४८॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—लघुपञ्चमूल के क्वाथ के साथ पीपल का चूर्ण लेने से कफयुक्त जो जीर्ण ज्वर है, वह दूर होता है ॥४८॥

अथ जीर्णविषमसन्निपातज्वराणां शान्त्युपायमाह—

शठी शुण्ठी रेणुः सुरतरुरनन्ता च बृहती
घनस्तिक्ता तिक्तं खलु नवभिरेभिर्विरचितः ।
कषायः पीतोयं मधुकणविमिश्रः शमयति
त्रिदोषं निःशेषं विषममपि जीर्णज्वरमपि ॥४६॥

भा० टी०—गन्धपलाशी, सोंठ, पित्तपापड़ा, देवदारु, जवासा, कटेरी, नागरमोथा, कुटकी, चिरायता, इनका क्वाथ मिट्टी के पात्र में पकाकर, उसमें पीपल का चूर्ण और शहद मिला कर पीने से सन्निपात ज्वर तथा जीर्णज्वर व विषम ज्वर आदि दूर होते हैं ॥४६॥

अथ ऐकाहिकज्वरस्यौषधमाह—

वासापटोलत्रिफलाद्राक्षासम्पाकनिम्बजः ।
स-मधुः स-सितः क्वाथो हन्यादैकाहिकं ज्वरम् ॥५०॥

भा० टी०—अड़ूसा, परवलके पत्ते, हरड़, बहेड़ा, आँवला, दाख, अमलतास, नीम के पत्ते, इनका क्वाथ बनाकर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीने से ऐकाहिक ज्वर नष्ट होता है ॥५०॥

तन्वङ्गि ! गंगोत्तरतीरभूमौ ममार हा कोप्यसुतस्तपस्वी ।
जलाञ्जलिं तस्य कृते ददातुसैकाहिकःसाद्यदि तेऽनुजन्मा

भा० टी०—हे तन्वङ्गि(कृशावयवे)! भागीरथीके उत्तर की तरफ किसी तपस्वी का पुत्र मर गया है । यदि वह तेरा छोटा भाई है तो उसे जलांजलि दे । अभिप्राय यह है कि ऐकाहिक ज्वर वाले रोगी को तर्पण देना चाहिये ।

अथ तृतीयकज्वरचिकित्सामाह—

सशिशिरः सघनः समहौषधः
सनलदः सकणः सपयोधरः ।
समधु-शर्कर एष कषायको
जयति बालमृगाक्षि ! तृतीयकम् ॥५२॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे बालमृगाक्षि (हिरनके बच्चे के समान नेत्र वाली) ! लालचन्दन, धनियां, सोंठ, खश, पीपल, नागर मोथा, इनका क्वाथ शहद और मिश्री मिलाकर पिलाने से तृतीयक (तिजरिया) ज्वर दूर होता है ॥५२॥

अथ चातुर्थिकज्वरचिकित्सा—

चतुर्थको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य न स्यात् ।
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकादिव साधुभावः ५३

भा० टी०—(१ वर्ष से अधिक समय का) पुराना घी और हींग इन दोनों को मिलाकर सूंघने से चौथय्या ज्वर दूर होता है। जैसे नवयौवना, सुंदर और विलासवती स्त्रियों के मुख कमल के दर्शन मात्र से साधु पुरुषों के सज्जनता के भाव नष्ट हो जाते हैं ॥५३॥

अखण्डितशरत्कालकलानिधिसमानने !
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिद्रुमदलाम्बुना ॥५४॥

भा० टी०—हे शरदृतु के पूर्ण चन्द्र के समान मुखवाली, ! अगस्त के पत्तों के स्वरस का नस्य लेने से चातुर्थिक (चौथे रोज आने वाला) ज्वर दूर होता है ॥५४॥

सुरदारुशिवाशिवास्थिरा वृषविश्वैः कथितः कषायकः
मधुना सितया समन्वितः परिपीतः शमयेचतुर्थकम् ॥५५॥

भा० टी०—देवदारु, हरड़, आंवला, शालपर्णी, अडूसा, सोंठ, इनका काढ़ा शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे चौथय्या ज्वर नष्ट होता है ॥५५॥

अथ शीतज्वरभेषजमाह—

तक्रं त्र्यूषणचूर्णयुक्तमथवा मद्यं हसन्तीं सतीं
तद्वत्कम्बलरल्लकानथ कुथां शीतातुरः शीलयेत् ।
आलिङ्गेदथवा मुहुर्दृढतरं तारुण्यमद्यालसाः
काश्मीरागुरुलिप्तपीवरकुचाः कामं कुरङ्गीदृशः ॥५६॥

भा० टी०—यदि शीत ज्वर वाले रोगी को ठंड अधिक लगे तो सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण तक्र के साथ पिलावे या आग से तापे या कम्बल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा पहाड़ी कम्बल या कंथारी ओढ़े या तरुण अवस्था वाली जिनके नेत्र मृग के समान हों, जिनके कुचों पर केशर और अगर का लेप हो रहा है, ऐसी स्त्रियों से आलिंगन करे (सहवास नहीं) ॥५६॥

शक्राह्वदद्रुघ्नवृषामृतानां निर्गुण्डिकाभृङ्गमहौषधानाम् ।
क्षुद्रायवानीसहितः कषायःशीतज्वरारण्यहिरण्यरेताः॥५७

भा० टी०—इन्द्रजौ, कसौंदी, अड़ूसा, गिलोय, संभालू, भांगरा, सोंठ, बड़ी कटेरी, अजवायन, इनका काढ़ा शीत ज्वर रूपी वनके नष्ट करने के लिए अग्नि के समान है ॥५७॥

अथ विषमज्वरभेषजमाह—

वाङ्माधुर्य्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीशिवाभे शिवा
विश्वं विश्ववरे घनो घनकुचे सिंही च सिंहोदरि !
एभिः पञ्चभिरौषधैर्मधुकणामिश्रः कषायः कृतः
पीतश्चेद्विषमज्वरः किमु तदा तन्वङ्गि ! न क्षीयते ॥५८॥

भा० टी०—गिलोय, आमला, सोंठ, नागरमोथा, कटेरी, इन पांचोंका क्वाथ पीपल और शहद मिला कर पीने से विषम ज्वर दूर होता है । [इन पाँचों को ही कवि ने सम्बोधन से कहा है]॥५८॥

सनागरायाः सपयोधरायाः
ससिंहिकायाः सगुडूचिकायाः ।
धात्र्याः कषायो मधुना विमिश्रः
कणाविमिश्रो विषमज्वरघ्नः ॥५९॥

भा० टी०—हे सुन्दरि ! सोंठ, नागरमोथा, कटेरी, गिलोय, आमला इनका क्वाथ शहद और पीपलका चूर्ण मिलाकर सेवन करनेसे विषम ज्वर नष्ट होता है ॥५९॥

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि
परन्तु कान्ते ! न रसोनकल्कात् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो
महासमीरे विषमज्वरेपि ॥६०॥

भा० टी०—हे सुन्दर अंगवाली ! अर्दित रोग में और विषम ज्वर में लशुन के कल्क को तेल में मिलाकर सेवन करने से बहुत लाभ होता है इससे श्रेष्ठ दूसरा योग नहीं है ॥६०॥

भवति विषमहन्त्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता
भवति विषमहन्त्री पिप्पली वर्धमाना ।
विषमज्वरमजाजी हन्ति युक्ता गुडेन
प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥६१॥

भा० टी०—हरड़ को शहद के साथ प्रयोग करने से विषम ज्वर दूर होता है । पिप्पली को क्रम से वढ़ा कर और घटा कर प्रयोग करने से विषमज्वर दूर होता है । अथवा जीरा का चूर्ण गुड़ के ग्रास के साथ सेवन करने से विषम ज्वर दूर होता है ॥६१॥

स्वकान्तिजितरोचने!चपललोचने!मालती-
प्रसूननिकरस्फुरत्कवरि!पञ्चवक्त्रोदरि !
पटोलकटुरोहिणीमधुकचेतकीमुस्तक-
प्रकल्पितकषायको विषममाशु जेजीयते॥६२॥

भा० टी०—अयि सुंदर कान्ति वाली तथा चंचल नेत्र वाली, एवं सुंदर केश वाली तथा सिंह के समान सूक्ष्म उदर वाली ! पटोलपत्र, कुटकी, मुलहठी, हरड़, नागरमोथा इन पांचों का काढ़ा पीने से विषम ज्वर दूर होता है ॥६२॥

किमु भ्रमयसि प्रिये ! कुवलयं कराभ्यामिदं
मदीयवचनं सुधारससमं समाकर्णय ।
पुराणविषमज्वरे कुलकनिम्बसिंहीन्द्रजा-
मृताघनकषायको मधुयुतो वरीवर्तते ॥६३॥

भा० टी०—हे प्रिये ! कमल के समान हाथों वाली ! क्यो भ्रम में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पड़ी हो ? अमृत के समान मेरे वाक्यों को सुनो, पुराने विषम ज्वर में परवल के पत्ते, नींबकी छाल, बड़ी कटेरी, इन्द्रजौ, गिलोय, नागरमोथा इनका काढ़ा बहुत उपयोगी है ॥६३॥

यो भजेत्समधुश्यामां हे हेमकलशस्तनि !
विषमेषु व्यथास्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥६४॥

भा० टी०—हे सुवर्ण घट के समान सुन्दर कुचवाली ! जो व्यक्ति पीपलों का चूर्ण शहद में मिलाकर सेवन करता है उसे विषम ज्वर की पीड़ा नहीं होती ॥६४॥

क्षणमपि चलतां जहीहि मुग्धे !
शृणु वचनं मम तन्वि ! सावधाना ।
वसति शिरसि मेघनादमूले
व्रजतितरां विषमो विलासदृष्टे ! ॥६५॥

भा० टी०—हे नवयौवने ! चंचल नेत्रों वाली ! कुछ समय के लिये चंचलता को त्यागकर हे तन्वि (कृशांगि) ! सावधान होकर मेरी बात सुनो । विषम ज्वर से पीड़ित व्यक्ति के शिर में चौलाई की जड़ बांधने से विषम ज्वर दूर होता है ॥६५॥

विषममपि हरत्यसौ कषायो
मधुमधुरो मदिरामृताशिवानाम् ।
अहमिव सततं तव प्रकोपं
चरणसरोरुहयोर्लुठन् हठेन ॥६६॥

भा० टी०—धाय के फूल, गिलोय और आंवला इनका क्वाथ शहद मिलाकर पीने से विषम ज्वर उसी प्रकार दूर होता है जिस प्रकार मैं तेरे क्रोध को जबर्दस्ती तेरे पैरों को छूकर नष्ट कर देता हूँ ॥६६॥

अबले ! कमलातनुरक्तकले ! चलदृक्कमले ! धृतकामकले !
अमृताऽब्दशिवं मधुमद्विषमे विषमे विषमेषु विलासरते !

भा० टी०—हे लक्ष्मी के समान सुन्दर शरीर वाली, तथा चंचल नेत्र

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

वाली, कासकले, विलासिनी, सुनो ! गिलोय, नागरमोथा और आमला का क्वाथ शहद मिलाकर पीने से विषम ज्वर दूर हो जाता है ६७।

अयि ! कुशाग्रसमानमते ! मते
मतिमतामतिमन्मथमन्थरे !
ज्वरहर रुगरिष्टशिवावचा-
यवहविर्जतुसर्षपधूपनम् ॥ ६८ ॥

भा० टी०—हे कुशाग्र बुद्धि वाली ! एवं पण्डितों में आदर पाने वाली ! कामदेव के बाणों से पीड़ित होकर मंद २ चलने वाली ! सुनो कूट, नीमकी छाल, आंवला, वच, इंद्रजौ, घी, लाख, सरसों इन पदार्थों की धूनी देने से ज्वर दूर होता है ॥६८॥

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटाम्भोधरैः कृतः ।
क्काथः पुनः समायान्तं ज्वरं शीघ्रं विनाशयेत् ॥६९।

भा० टी०—कुटकी, खश, खरैंटी, धनियां, पित्तपापड़ा, नागरमोथा इनका क्वाथ दिन में दो बार आने वाले ज्वर को दूर करता है ॥६९॥

गोपीद्वयामलकीस्थिरामगधजातिक्तापयःपालिनी-
द्राक्षाश्रीफलधावनीहिमविषामुस्तेन्द्रजैः साधितम् ।
स्यादाज्यं विषमज्वरक्षयशिरःपार्श्वव्यथारोचक—
च्छर्दिःशोफहलीमकप्रशमनं लीलालतामञ्जरि ! ॥७०॥

भा० टी०—हे सुन्दरि ! सारिवा, आंवला, शालपर्णी, पीपल, कुटकी, नेत्रवाला, त्रायमाणा, दाख, बेल, कटेरी, लालचन्दन, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रजौ, इनके सिद्ध किये हुए घृत के सेवन से विषमज्वर, वमन, आधा सीसी, क्षय, अरुचि, सूजन, पाण्डुरोग आदि दूर होते हैं ॥७०॥

चलदलतरुसेवाहोममन्त्रौ त्रिनेत्र-
द्विजसुरगुरुपूजाकृष्णनाम्नां सहस्रम् ।
मणिघृतिपरिदानान्याशिषस्तापसानां
सकलमिदमरिष्टं स्पष्टमष्टज्वराणाम् ॥७१॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—पीपल के वृक्ष की पूजा, होम, जप, महादेवजी की पूजा, ब्राह्मण, गुरु और देवताओं की पूजा, गोपालसहस्रनाम का पाठ, रत्नों का धारण, दान, तपस्वीजनों का आशीर्वाद इत्यादि कर्म्मों के करने से आठों प्रकार के ज्वर दूर होते हैं ।।७१।।

अयि रत्नकले ! कलानिधे ! कुशले ! कोकिलकोमलस्वरे !
ज्वरवान् ज्वरवर्जितोऽथवा लघु कुर्याद्दशनं दिनात्यये।७२

भा० टी०—हे स्त्री जाति की शिरोमणि ! हे कलानिधि ! हे कुशल नायिका ! हे मधुर वचन बोलने वाली ! ज्वर युक्त मनुष्य को अथवा ज्वर-मुक्त को सायंकाल के समय हलका भोजन करना चाहिये ।।७२।।

इति श्रीलोलिम्मराजकृतौ ज्वरप्रतीकारः प्रथमो विलासः ।। १ ।।

द्वितीयो विलासः ।

अथ ज्वरातिसारचिकित्सा—

अमृतातिविषासुरराजयव-
स्तनयित्नुकिरातकविश्वपयः ।
अतिसारहरं ज्वरनाशकरं
शृणु निर्जितकुञ्जरकुम्भकुचे ! ॥१॥

भा० टी०—हे स्थूल कुचवाली ! गिलोय, अतीस, इन्द्र जौ, नागरमोथा, चिरायता, सोंठ इन छः औषधियों के चूर्ण के सेवन से सब प्रकार के ज्वर तथा अतीसार नष्ट होते हैं ।।१।।

शीतोशीरकयुग्मवत्सकवृकीपद्माह्वधान्यामृता—
भूनिम्बाम्बुदवालबिल्वकविषाविश्वौषधैः साधितः ।
क्वाथो माक्षिकसाक्षिको विजयते हृल्लासतृष्णावमी-
दाहारोचकसङ्गभङ्गचतुरः सर्वातिसारामयान् ।।२।।

भा० टी०—लालचन्दन, दोनों खश, कुटज की छाल, पाठा, कमल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

धनियां, गिलोय, चिरायता, नागरमोथा, नेत्रवाला, बेलगिरी, अतीस, सोंठ, इनका क्वाथ शहद मिलाकर पीने से हिचकी, प्यास, उलटी, जलन, अन्न में अरुचि (भोजन की इच्छा का न होना), सब प्रकार के दस्त, ये सब रोग दूर होते हैं ॥२॥

पञ्चांघ्रिवृक्यब्दबलेन्द्रबीज-
त्वक्सेव्यतिक्तामृतविश्वबिल्वैः ।
ज्वरातिसारान् सवमीन् सकासान्
सश्वासशूलान् शमयेत्कषायः ॥३॥

भा० टी०—शालपर्णी, पृष्णपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरु, पाठा, नागरमोथा, खरैंटी, इन्द्र जौ, कुटज की छाल, खश, कुटकी, गिलोय, सोंठ, बेलगिरी, इन पन्द्रह औषधियों का क्वाथ उलटी, खांसी, श्वास और शूल इनसे युक्त ज्वरातिसार को शीघ्र दूर करता है ।

कफाधिके वा पवनाधिके वा
द्वयाधिके वा गुरुपञ्चमूलम् ।
पित्ताधिके वा लघुपञ्चमूलं
पुनः पुनः पृच्छसि किं मृगाक्षि ! ॥४॥

भा० टी०—हे मृगनयनि ! कफ प्रधान ज्वरातिसार में अथवा वात प्रधान अथवा वात कफ प्रधान ज्वरातिसार में, गुरुपञ्चमूल (बेलगिरी, अरलू, खंभार, पाढल, अरनी) इनकी छाल का काढ़ा बहुत उपयोगी है । पित्त प्रधान ज्वरातिसार में लघु पञ्चमूल (शालपर्णी, पृष्णपर्णी, दोनों कटेरी, गोखरु, इन) का क्वाथ लाभदायक है ॥४॥

अथ शोकातिसारचिकित्सा –

सदेवदारुः सविषः सपाठः
सजन्तुशत्रुः सघनः सतीक्ष्णः ।
सवत्सकः क्वाथ उदाहृतोऽसौ
शोकातिसाराम्बुधिकुम्भजन्मा ॥५॥

भा० टी०—हे मृगाक्षि ! देवदारु, अतीस, पाठा, वायबिडंग, नागर-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

मोथा, मिरच, कुटज की छाल, इनका क्वाथ पीनेसे शोक और क्रोध से उत्पन्न हुआ अतीसार दूर होता है ॥५॥

अथ अतीसारचिकित्सा—

अयि प्रिये ! प्रीतिभृतां मुरारौ
किं बालकश्रीघनधान्यविश्वैः ।
यस्याप्यतीसाररुजो न तस्य
किं बालकश्रीघनधान्यविश्वैः ॥६॥

भा० टी०—हे प्रिये ! श्रीकृष्णभगवान् के प्रीतिपात्र पुरुषों को लक्ष्मी, धन (सम्पत्ति) तथा संसार के प्रपञ्चों से क्या मतलब ? इसी प्रकार जिसको अतीसार रोग नहीं है उसे नेत्रवाला, बेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, सोंठ इनसे क्या लाभ अर्थात् जो अतीसार का रोगी है उसे नेत्र-वाला, बेलगिरी, मोथा, धनियां, सोंठ, ये लाभदायक हैं ॥६॥

पित्तातिसारो धान्याम्बुबिल्वाब्दानां निरुध्यते ।
केनाऽत्र ज्ञायते कर्ता परिडतेन त्वया विना ॥७॥

भा० टी०—हे प्रिये ! धनियां, नेत्रवाला, बेलगिरी, नागरमोथा, इनका क्वाथ ठंढा करके पीने से पित्तातिसार दूर होता है। यह बात तेरे सिवाय किसी दूसरे को मालूम नहीं है ॥७॥

इन्द्रजमेघमदाकुसुमश्रीरोध्रमहौषधमोचरसानाम् ।
चूर्णमिदं गुडतक्रसमेतं हन्त्यचिरादतिसारमुदारम् ॥८॥

भा० टी०—इन्द्रजौ, नागरमोथा, धाय के फूल, कच्चा बेल, लोध, सोंठ, मोचरस इनका चूर्ण गुड़ और तक्र के साथ सेवन करने से बहुत पुराना अतीसार दूर होता है ॥८॥

कल्याणि ! काञ्चनलतालतिताङ्गयष्टे !
ताम्बूलशालिवदने ! ललने ! शृणुष्व ।
शुण्ठीमदाकुसुममोचरसाजमोदा-
स्तक्रान्विताः प्रशमयन्त्यतिसारमुग्रम् ॥९॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे भद्रे! हे सुवर्णलता के समान सुन्दर शरीर वाली! हे ताम्बूल सेवित मुख वाली प्रिये! सुन। सोंठ, धाय के फूल, मोचरस, अजवायन, इन चारों का चूर्ण तक्र के साथ सेवन करने से भयानक अतीसार दूर होता है ॥९॥

अतिसारप्रशमनी चित्रपत्रकशोभिता।
वृद्धिदाऽतनुवह्नेश्च श्यामा श्यामेव राजते ॥१०॥

भा० टी०—हे कल्याणि! श्यामा अर्थात् सारिवा जिसकी शोभा अनेक प्रकारके पलाशादि वृक्षों द्वारा बढ़ रही है वह जठराग्नि को बढ़ाती है, साथ ही अतिसार को दूर करती है। जिस तरह श्यामा अर्थात् षोडश वर्षीया स्त्री, जिसके गण्डस्थल तथा कुचों पर कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ लगे हुए है वह, अपने से वलवान् पुरुष के मदको नष्ट करती है तथा जठराग्नि को बढ़ाती है ॥१०॥

बाले! बाललताप्रवाललिताकारांघ्रिहस्ताधरे!
मल्लीमाल्यलसत्कुचक्षितिधरे! रत्नज्वलन्मेखले!
चञ्चत्कुण्डलमण्डले विजयते रक्तामशूलान्विता-
तीसारं कुटजाब्दबिल्वकविषोदीच्यैः कषायः कृतः ११

भा० टी०—हे बाले! वृक्ष की कोमल शाखाओं के समान हाथ पैर तथा सुन्दर ओष्ठ वाली! मल्लिका की माला से सुशोभित एवं सुन्दर कुचवाली! तथा मणिमुक्तादि रत्नों की मेखला (करधनी) को धारण करने वाली! सुन्दर कर्णफूलों से सुशोभित कपोल वाली! सुनो, आम, रक्त और शूल से युक्त दस्तों में बेलगिरी, सोंठ, अतीस, नेत्रवाला इनका क्वाथ पीने से रोगी को लाभ होता है ॥११॥

धातक्यामलकीपयोधरवृकी कट्वङ्गयष्टीमधु-
श्रीजम्ब्वाम्रफलास्थिनागरविषाह्रीवेरलोध्रेन्द्रजैः।
तुल्यांशैर्विहितं सतण्डुलजलं गङ्गाधराख्यं मह-
च्चूर्णं तूर्णमपाकरोति सकलं जीर्णातिसारं परम् १२

भा० टी०—धायके फूल, आंवला, नागरमोथा, पाठा, अरलू की छाल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

मुलहठी, वेलगिरी, जामुन की गुठली, आम की गुठली, सोंठ, अतीस, नेत्रवाला, लोध, इन्द्र जौ इनका चूर्ण चावल के पानी के साथ लेने से सब प्रकार के भयंकर अतीसार दूर होते हैं। यह बृहद्गंगाधर चूर्ण है, सब प्रकार के पुराने अतिसारों को दूर करता है ॥१२॥

अथ रक्तातिसारचिकित्सा—

अयि कन्दुकनिन्दकस्तनि ! प्रमदारूपमदापहारिणि !
रुधिरातिसृतौ कषायकः समधुर्दाडिमवल्सकत्वचः॥१३॥

भा० टी०—हे सुन्दर गेंद से भी श्रेष्ठ कुच वाली ! एवं सुन्दर स्त्रियों के मद को हरने वाली अर्थात् अति सुंदरि ! अतिलावण्यमयि ! सुन, अनारके फलका छिलका (वक्कल) और कुटजकी छाल इनका चूर्ण शहद मिला कर पीने से, रक्तातिसार (खून के दस्तों) को नष्ट करता है।

चन्दनं विमलतण्डुलाम्बुना संयुतं मधुयुतं सितायुतम् ।
तृड्विखण्डनमसृग्विखण्डनं खण्डनं प्रचुरदाहमेहयोः॥१४॥

भा० टी०—श्वेत चन्दन को निर्मल चावल के पानी में घिस कर शहद और मिश्री के साथ मिला कर पीने से प्यास, रक्तातिसार, शरीर की जलन तथा प्रमेह आदि रोग दूर होते हैं ॥१४॥

कुक्षिशूलामशूलघ्नं विविधास्रातिसारजित् ।
सेवेत सगुडं बिल्वं बिल्वतुल्यपयोधरे ! ॥१५॥

भा० टी०—हे बिल्व के फल के समान स्थूल कुच वाली ! नवीन बिल्व का चूर्ण गुड़ के साथ खाने से सब प्रकार के अतीसार, कुक्षि शूल तथा आम शूल, विबन्ध (वायु का रुक जाना) आदि सब रोग दूर होते हैं ॥१५॥

तृट्श्वासकासज्वरशोफमूर्च्छाहिक्कान्नविद्वेषणवान्तिशूलैः ॥
युक्तोऽतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविन्ददामोदरमाधवेति॥

भा० टी०—जिस अतीसार वाले रोगी को प्यास अधिक लगे, श्वास खांसी ज्वर सूजन मूर्च्छा हिचकी अन्न से वैर उलटी आदि दस उपद्रवों से युक्त होतो, वह सब प्रकार के प्रपञ्चों को छोड़ कर, हे गोविन्द, हे माधव, हे दामोदर इनका जप करे, इससे बहुत लाभ होगा ॥१६॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रहणीचिकित्सामाह—

यवानीनागरोशीरधनिकातिविषाधनैः ।
बलाबिल्वद्विपर्णीभिर्दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥१७॥

भा० टी०—अजवायन, सोंठ, खश, धनियां, अतीस, नागरमोथा, खिरैंटी, बेलगिरी, शालपर्णी, पृश्नपर्णी इनका क्वाथ संग्रहणी में दोषों को पचाने वाला है, अग्नि को दीप्त करता है ॥१७॥

पुनर्नवावह्निजबाणपुंखा-
विश्वाग्निपथ्याचिरबिल्वबिल्वैः ।
कृतः कषायः शमयेदशेषान्
दुर्नामगुल्मग्रहणीविकारान् ॥१८॥

भा० टी०—पुनर्नवा (सांठी), मरिच, शरपुंखा, सोंठ, चित्रक, हरड़, करञ्ज, कच्चाबेल इनका क्वाथ बवासीर, वायुगोला, संग्रहणी आदि रोगों को नष्ट करता है ॥१८॥

शुण्ठीछिन्नरुहाविषाजलधरैस्तुल्यैः कषायः कृतो
मन्दाग्नौ ग्रहणीगदेऽपि सततं सामानुबन्धे हितः ।
शुण्ठी कल्ककृतं घृतं प्रपिबतः पाण्ड्वामकासापहं
स्याद्वायोरनुलोमनं ग्रहणिका वेगेन जङ्गम्यते॥१९॥

भा० टी०—यदि संग्रहणी वाले रोगी को मन्दाग्नि होय और दस्तोंमें आँव आतीहो तो सोंठ, गिलोय, अतीस, नागरमोथा, इन चारोंका क्वाथ हितकारी है। शुण्ठी के कल्क से सिद्ध किया घृत पान करने से पाण्डुरोग, आम, खांसी आदि नष्ट होते हैं, अपान वायु की प्रवृत्ति होती है और संग्रहणी रोग सदा को नष्ट हो जाता है ॥१९॥

पाठाविषाकुटजवृक्षफलत्वगब्द-
तिक्तामदारसजनागरबिल्वचूर्णम् ।
सक्षौद्रतण्डुलजलं ग्रहणीप्रवाह-
रक्तप्रवाहगुदरुग्गुदजेषु दद्यात् ॥२०॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—पाठा, अतीस, इन्द्रजौ, कुटज की छाल, नागरमोथा, कुटकी, धाय के फूल, रसौत, सोंठ, वेलगिरी इनका चूर्ण चावल के पानी में शहद मिला कर चूर्ण के ऊपर पीने से संग्रहणी, रक्तातिसार, गुदा की पीड़ा और अर्श ये रोग दूर होते हैं ॥२०॥

तुल्यांशं सकलं किरातकटुकामुस्तेन्द्रजत्र्यूषणं
भागश्चन्द्रकलामितः कुटजतो भागद्वयं चित्रकात् ।
चूर्णं चन्द्रकलाभिधं गुडपयोयुक्तं च पाण्डुज्वरा-
तीसारारुचिकामलाग्रहणिकागुल्मप्रमेहापहम् ॥२१॥

भा० टी०—चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्र जौ, सोंठ, मिरच, पीपल इन सातों द्रव्यों का समान भाग लेकर, कुटज की छाल का चूर्ण सब द्रव्यों का १६ वां भाग, चित्रक २ भाग ले । यह चन्द्रकला नामक चूर्ण है । इस चूर्ण के सेवन करते समय अनुपान में चूर्ण से द्विगुण गुड़ जल में मिलाकर पीने से पाण्डुरोग, ज्वर, अतीसार, भोजन में अरुचि, कामला, ग्रहणी, वायुगोला और प्रमेह ये सब रोग नष्ट होते हैं ॥२१॥

क्षारद्वन्द्वपटुत्रिकत्रिकटुकैश्चव्याजमोदानलैः
कृष्णामूलकहिंगुजीरमिशिभिस्तुल्यैर्विधेयं रजः ।
पीतं कोष्णजलेन कोलपयसा तक्रेण वान्यौषधात्
हृत्क्षुद्गुल्मगुदाङ्कुरग्रहणिषु प्रायः प्रियं प्रेयसि ! ॥२२॥

भा० टी०—सज्जीखार, जवाखार, खारानमक, कालानमक, संधानमक, सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य, अजमोद, चीता, पीपलामूल, हींग, जीरा, सौंफ, इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर लें । इस चूर्ण को गुनगुने जल या झरबेरीके काढ़ा या मठाके साथ सेवन करनेसे हे प्यारी ! हृदयके रोग, भूखकी कमी, वायुगोला, बवासीर और संग्रहणी ये सब रोग दूर होते हैं ॥

द्विक्षारषट्कटुपटुव्रजहिंगुदीप्यैः
स्यात्सारलुंगबदरैकरसेन युक्तम् ।
श्लेष्मानिलग्रहणिकागुदजे प्रशस्तं
लोकत्रयैकमतिदीपनपाचनेऽलम् ॥२३॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—सज्जीखार, जवाखार, पीपला मूल, पीपल, वच, चीता, सोंठ, मिरच, सेंधा नमक, सोंचर नमक, खारी नमक, समुद्र नमक, सांभर नमक, हींग, अजवायन इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण बना लें। इसमें अमल वेंत या बिजौरा नींबू अथवा बदर (पानी आंवला) इनमें से किसी के रस की भावना दे देवें। इस चूर्ण के सेवन से कफ वादी तथा संग्रहणी और अर्श दूर होते हैं, इस चूर्ण के समान दीपन पाचन के लिये तीनों लोकों में दूसरा चूर्ण नहीं है ॥२३॥

चूर्णं चित्रकचव्यश्रीविश्वभेषजनिर्मितम् ।
तक्रेण सहितं हन्ति ग्रहणीं दुःखकारिणीम् ॥२४॥

भा० टी०—चित्रक, चव्य, बेलगिरी, सोंठ इनको समान भाग लेकर चूर्ण करे और यह चूर्ण तक्र के साथ सेवन करे तो दुःखदायिनी संग्रहणी दूर होती है ॥२४॥

रुचकाग्निमरीचानां चूर्णं तक्रेण सेवितम् ।
ग्रहण्युदरगुल्मार्शः क्षुन्मान्द्यप्लीहनाशनम् ॥२५॥

भा० टी०—काला नमक, चीता, और काली मिरच इनका चूर्ण तक्र के साथ सेवन करने से संग्रहणी रोग, उदर रोग, वायु गोला, बवासीर, भूख की कमी, प्लीहा आदि रोग नष्ट होते हैं ॥२५॥

आज्यं पयोधरजलेन्द्रजबालबिल्व-
ह्रीवेरमोचरसकल्कयुतं विपक्वम् ।
आमानुबन्धसहितं रुधिरान्वितं च
सद्यो निहन्ति गृहिणि ! ग्रहणीविकारम् ॥२६॥

भा० टी०—नागर मोथा, खश, इन्द्र जौ, कच्चा बेल, नेत्रवाला इनके कल्क से घृत सिद्ध करे। हे गृहिणि ! इस घृत के कुछ दिन सेवन करनेसे आम, रुधिर से युक्त जो संग्रहणी हो वह शीघ्र नष्ट होती है ॥२६॥

इति श्रीवैद्यजीवने अतिसारग्रहणीप्रतीकारो द्वितीयो विलासः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीयो विलासः ।

अथ कासश्वासादीनां चिकित्सामाह –

अतः परं कोमलवाणि ! कास-
श्वासप्रतीकारमुदीरयामः ।
निहन्ति कासं गुरुपञ्चमूली-
कृतः कषायश्चपलासहायः ॥१॥

भा० टी०—हे मनोहर वाणी वाली ! मैं अब यहां कास श्वास आदि रोगों की चिकित्सा लिखूँगा । वेलगिरी, अरलू, गम्भारी, पाढल, अरनी, इनकी छाल का क्वाथ पिप्पली का चूर्ण मिला कर पीने से खांसी और श्वास को नष्ट करता है ॥१॥

घनविश्वशिवागुडजा गुटिका
त्रिदिनं वदनाम्बुजमध्यधृता ।
हरति श्वसनं कसनं ललने !
ललनेव हिमं हृदयोपगता ॥२॥

भा० टी०—नागर मोथा, सोंठ, हरड़, इनको समान भाग लेकर द्विगुण गुड़ मिला कर गोली बना लें, इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से, हे कामिनि ! श्वास और खांसी ये नष्ट होते हैं । जैसे कामिनी को हृदय से लगाने से शीत नष्ट हो जाती है ॥२॥

अजस्य मूत्रस्य शतं पलानां
शतं पलानां च कलिद्रुमस्य ।
पक्वं समध्वाशु निहन्ति कासं
श्वासं च तद्वत् सबलं बलासम् ॥३॥

भा० टी०—१००पल (५ सेर)बकरीका मूत्र लें और१००पल बहेड़ेकी बक्कल, इन दोनों को पकावें और शहद मिला कर अवलेह सिद्ध कर लें । इस अवलेह के सेवन से खांसी, श्वास और कफ की प्रवलता शीघ्र नष्ट होती हैं ॥३॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

आर्द्रादर्द्धतुला गुडादपि तथाऽर्द्धांशं च कुस्तुम्बरी-
दीप्यायोजरणात्रिजातजलदाद्दार्व्या पचेद्युक्तितः।
लेह्यो रत्नकले! तवैव कथितः प्राणप्रियाया मया
कासार्शोज्वरपीनसश्वयथुरुग्गुल्मक्षयध्वंसनः ॥ ४ ॥

भा० टी०—अदरख का स्वरस ५० पल, गुड़ ५० पल, धनियां, अजवायन, लोह चूर्ण, काला जीरा, दाल चीनी, इलायची, तेज पात, नागर मोथा इन आठों को इस प्रकार लें जिसमें ये सब मिल कर २५ पल हो जावें फिर इनको मन्दाग्निसे पकावें। जब चाटने योग्य हो जावे तब उतार लें। हे रत्नकले! इसके सेवन से कास, श्वास, अर्श, ज्वर, पीनस, सूजन, वायुगोला, राजयक्ष्मा दूर होते हैं। यह मैंने तुम्हींको बतलाया है।

रास्नाबलापद्मकदेवदारु-
फलत्रिकत्र्यूषणवेल्लचूर्णम्।
चिन्तामणिक्षौद्रघृतोपपन्नं
श्वासं च कासं च निराकरोति ॥५॥

भा० टी०—रासना, खरैटी, पद्मकाष्ठ, देवदारु, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, इनके समान भाग के चूर्ण को चिन्ता मणि चूर्ण कहते हैं। इसे विषम मात्रा में शहद और घी के साथ सेवन करने से श्वास और खांसी दूर होते हैं ॥५॥

वासाहरिद्रामगधागुडूची-
भार्ङ्गीघनानागरधावनीनाम्।
क्वाथेन मारीचरजोन्वितेन
श्वासः शमं याति न कस्य पुंसः ॥६॥

भा० टी०—अडूसा, हलदी, पीपल, गिलोय, भारंगी, रुद्र जटा, सोंठ, कटहली की जड़ इन आठों औषधियों का क्वाथ बनाकर उसमें मिरच का चूर्ण मिला कर पीने से श्वास रोग नष्ट हो जाता है ॥६॥

तुल्या लवङ्गमरिचाक्षफलत्वचः स्युः
सर्वैः समो निगदितः खदिरस्य सारः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

बव्बूलवृक्षजकषाययुतश्च चूर्णं
कासान्निहन्ति गुटिका घटिकाष्टकान्ते ॥७॥

भा॰ टी॰—लौंग, मिरच, बहेड़े का वक्कल, एक २ भाग, इन तीनों के समान कत्था ले। फिर बब्बूल के क्वाथ में घोंट कर गोली वना लें। इन गोलियों के सेवनसे आठ घड़ी में ही खांसी दूर होती है ॥७॥

रूपं कीदृक् कमलवदने! नुः परे सौ गिरेः स्यात्
सम्बुद्धिः का मधुरवचने! काऽग्निबीजस्य षष्ठी।
कस्य क्वाथः श्वसनशमनो वल्लभेनेति पृष्टा
विद्वद्वन्द्या द्रुतमिदमदात्सोत्तरं नागरस्य ॥८॥

भा॰ टी॰—हे कमलके समान सुंदर शरीर वाली! नृ शब्दका प्रथमा के एक वचनमें क्या रूप होता है(=ना)? हे मधुरवचने! गिरिके वाचक अगशब्द का सम्बोधनके एक वचनमें क्या रूप होता है (=अग)? अग्निके बीज'र'का षष्ठी विभक्तिमें क्या रूप होता है (=रस्य)? श्वास और कास इन दोनोंको नाश करने के लिये कौनसा क्वाथ है? यह लोलिम्बराजने अपनी प्रेयसी से पूछा। विद्वानों में श्रेष्ठ रत्नकला (लोलिम्बराजकी पत्नी) ने कहा (न+अग+रस्य) सोंठ का क्वाथ अति श्रेष्ठ है ॥८॥

अयि रत्नकले! नीलनलिनच्छदवीक्षणे!
सिंहीकषायः सकणः कासग्रासकरः क्षणात् ॥९॥

भा॰ टी॰—हे रत्नकले! नील कमल के पत्रों के समान नेत्र वाली! कटेरी का क्वाथ और पीपल का चूर्ण इन दोनों को मिला कर सेवन करने से शीघ्र ही खांसी दूर होती है ॥९॥

पिप्पली-पिप्पलीमूल-बिभीतक-महौषधैः।
मधुना सेवितैः कासः प्रशाम्यति कुतूहलम् ॥१०॥

भा॰ टी॰—पीपल, पीपला मूल, वहेडे का वक्कल, सोंठ इनका चूर्ण शहद में मिला कर सेवन करने से खांसी में आश्चर्य्यजनक लाभ होता है।

कटुतैलेन संयुक्तो गुड़ो यावन्न सेवितः।
तावन्नश्यति किं श्वासः पीयूषमधुराधरे! ॥११॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे अमृत के समान मधुर ओष्ठ वाली ! सरसों के तेल में गुड़ मिला कर जब तक श्वास वाला रोगी सेवन नहीं करे तब तक क्या श्वासरोग नष्ट हो सकता है ? तात्पर्य यह है कि यह श्वासके लिये अव्यर्थ प्रयोग है ॥११॥

रावणस्य सुतो हन्यान्मुखवारिजधारितः ।
श्वसनं कसनं चापि तमिवानिलनन्दनः ॥१२॥

भा० टी०—बहेड़े का चूर्ण मुख में रखने से अर्थात् सेवन करने से श्वास और कास नष्ट होते हैं । जिस प्रकार वायु के पुत्र हनुमान ने रावण के पुत्र अक्षय को मारा था । (लोक में भी प्रसिद्ध है कि 'कपीशमक्ष-हन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्') ॥१२॥

अयि प्राणप्रिये ! जातिफललोहितलोचने !
शुण्ठीभार्ङ्गीकृतः क्वाथः कसनश्वसनाहिराट् ॥१३॥

भा० टी०—हे प्रिये जातिफल के समान लोहित नेत्रवाली ! शुण्ठी, भारंगी इनका क्वाथ पीने से श्वास और खांसी दूर होते हैं ॥१३॥

संयुक्तो गुडसर्पिर्भ्यां चूर्णस्त्रिकटुसम्भवः ।
निहन्ति तरसा श्वासं त्रासानिव सतां हरिः ॥१४॥

भा० टी०—सोंठ,मिरच,पीपल इनको समान भाग ले कर चूर्ण करे । इस चूर्ण को गुड और घी मिला कर सेवन करें तो श्वास रोग शीघ्र दूर हो जाता है । जैसे भगवान् विष्णु साधु एवं धर्मात्मा पुरुषों के भय को शीघ्र नष्ट करते हैं ॥१४॥

शृंगवेररसो येन मधुना सह सेवितः ।
श्वासकासभयं तस्य न कदाचित्कृशोदरि ! ॥१५॥

भा० टी०—हे कृशोदरि ! अदरख का रस शहद मिला कर सेवन करने से श्वास और खांसी का भय नहीं रहता ॥१५॥

पुलोमजावल्लभसूनुपत्नीतातात्मभूशेखरवाहनस्य ।
सौंदर्य्यदूरीकृतरामरामे ! कषायकः कासमीरसर्पः ॥१६॥

भा० टी०—पुलोमजा (इन्द्र की स्त्री) का पति (इन्द्र), इन्द्र का

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्र अर्जुन, उसकी पत्नी (द्रौपदी), द्रौपदी का पिता (द्रुपद) उसका पुत्र (शिखण्डी) शिखण्डी = सर्प अर्थात् सर्प की जो माला धारण किये हैं ऐसे शिव और उनका वाहन अर्थात् वृष = अडूस। हे सुंदरि ! केवल अडूसे का क्वाथ ही खांसी को नष्ट करने में रामबाण है। इस श्लोक में साधारण बात को कवि ने बड़ी गूढ़ता से लिखा है ॥१६॥

फलत्रयं छिन्नरुहा सचित्रा
रास्ना कृमिघ्नं सकटुत्रयश्च ।
चूर्णं समांशं सितया समेतं
कासं जयेन्नात्र विचारणीयम् ॥१७॥

भा० टी०- हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, चित्रक, रासना, वाय-विडंग, सोंठ, मिरच, पीपल इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर लें, चूर्ण के बराबर मिश्री ले। इसके सेवन से खांसी नष्ट होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं ॥१७॥

आमवातप्रतीकारमाह—

दशमूलकषायमिश्रितं वा
ललने ! विश्वकषायमिश्रितं वा ।
प्रपिबेत् कटिकुक्षिबस्तिशूले
ध्रुवमेरण्डजमेकमेव तैलम् ॥१८॥

भा०—टी०- हे ललने ! यदि कमर, कुक्षि तथा मूत्राशय में पीड़ा हो तो शालपर्णी, पृष्णपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरु, बेलगिरी, अरलू, अरनी, पाढल, गंभारी, इन दश द्रव्यों (दशमूल) के काढ़े को अण्डी का तेल मिला कर पीना चाहिये। अथवा केवल सोंठ का ही काढ़ा अण्डी का तेल मिलाकर पीना चाहिये ॥१८॥

रास्नामृतानागरदेवदारुपञ्चांघ्रियुग्मेन्द्रयवैः कषायः ।
रुबूकतैलेन समन्वितोऽयं हर्ता भवेदामसमीरणस्य ॥१९॥

भा० टी०—रासन, गिलोय, सोंठ, देवदारु, दशमूल, इन्द्र जौ इनके क्वाथ में अण्डी का तेल मिला कर पीने से आमवात नष्ट होता है॥१९॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

विलासिनी विलासेन विलासिहृदयं यथा ।
तथा गुडूचीविश्वेन हरेदामसमीरणम् ॥२०॥

भा० टी०—विलासिनी स्त्री जिस तरह कामी पुरुषों के चित्त को हाव भाव कटाक्ष आदि द्वारा हर लेती है उसी भाँति गिलोय और सोंठ इनका क्वाथ आमवात को हर लेता है ॥२०॥

चक्षुरोगस्य चिकित्सामाह—

सम्यक्स्विन्नाश्छगलजरसे काननोत्थाः कुलत्था-
श्चैले बद्धाः परिहृततुषाः प्रौढसीमन्तिनीभिः ।
सूक्ष्मं पिष्टाः पटुरसनिशाचूर्णपूर्णाः क्षपायां
चक्षुःक्षिप्ताः सकलरुधिरं संहरन्ति त्र्यहेण ॥२१॥

भा० टी०—वन कुलथीको उत्तम स्वच्छ वस्त्र की पोटली में बाँध कर दोलायन्त्र द्वारा बकरी के मूत्र में अच्छी तरह पकावें । जब पक जावे तब उनके तुष दूर करके चतुर स्त्रियों को चाहिये कि वे उन्हें काजल के समान बारीक पीस लें । फिर उसमें हलदी, खर्पर, सेंधा नमक मिला कर नेत्रों में लगावे तो तीन ही दिन में नेत्र के समस्त रुधिरविकार दूर होते हैं ॥२१॥

लोलिम्मराजकविना वनितावतंसे !
शिग्रोरमुष्य कथितोस्ति किमूपयोगः ।
एतस्य पल्लवरसात्समधोः किमन्यद्-
दृग्व्याधिमात्रहरणे महिलाग्रगण्ये ! ॥२२॥

भा० टी०—हे नारीशिरोमणि ! क्या लोलिम्बराजने सहँजने का कोई उपयोग बतलाया है । सखी उत्तर देती है—हे महिलाशिरोमणि ! सहँजने के पत्तों का स्वरस शहद के साथ नेत्रों में लगाने से नेत्र के सब रोग दूर होते हैं । इसके समान नेत्र की व्याधि हरने वाली दूसरी औषधि नहीं है ॥२२॥

कुवलयनयनेऽर्जुनं कफोब्धेः समुद्रफेनः
सह सितया सुनिशाचरीकरोति ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

प्रियकरमिव कामिनी नवोढा
लघुकुचशालिनि वक्षसि प्रयुक्तम् ॥२३॥

भा० टी०—हे कमल के समान सुन्दर नेत्रवाली ! समुद्रफेन और मिश्री इनका चूर्ण आँजने से अर्जुन रोग इस प्रकार दूर होता है जैसे नवोढा वधू अपने प्रियतमके हाथोंको अपने ह्रस्व कुचों परसे हटा देती है ।

इति निगदितमार्ये ! नेत्ररोगातुराणां
निशि समधुघृताग्र्या सेव्यमाना सुखाय ।
अयि नवशिशुलीलालोलदृष्टे ! त्वमग्र्या
जनयसि बत कस्माद्वैपरीत्यं परन्तु ॥२४॥

भा० टी०—हे आर्य्यपुत्री ! नेत्ररोगों के लिये मधु और घृत के साथ त्रिफला का सेवन लाभदायक है । हे चञ्चलनेत्रवाली ! तूभी श्रेष्ठ है परन्तु खेद है, कि तू रात्रि में नेत्र रोग वाले रोगियोंके विपरीत पड़ती है । अर्थात् नेत्र रोग वाले व्यक्ति को मैथुन सर्वथा त्याज्य है ॥२४॥

निराकरोति नक्तान्ध्यं सगोमयरसा कणा ।
यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम् ॥२५॥

भा० टी०—गाय के गोबर से भावित पीपल का चूर्ण आँजने से रतौंधी इस प्रकार नष्ट होती है जैसे कामिनी, भोग विलासों द्वारा, अपने प्रियतम के पराक्रम को नष्ट कर देती है ॥२५॥

शुक्ररोगप्रतीकारमाह—

श्यामेऽश्यामे ! प्रियश्यामे ! श्यामाबोधितमानसे !
शुक्रं शमयति क्षिप्रं माक्षिकं माक्षिकान्वितम् ॥२६॥

भा० टी०—हे षोडशी ! गौरवर्ण वाली ! श्रीकृष्ण की पत्नी के समान सुन्दरी ! मधु (शहद) के साथ सोनामाखी का कज्जल समान चूर्ण आँजने से शुक्ररोग (आँखों का फूला) शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥२६॥

कामलाप्रतीकारमाह—

त्रिफला वृषभूनिम्बनिम्बतिक्तामृताकृतः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

क्वाथो मधुयुतः पीतः कमलापाण्डुरोगजित् ॥२७॥

भा० टी०—हरड़, बहेड़ा, आमला, अड़ूसा, चिरायता, नींब की छाल, कुटकी, गिलोय, इन द्रव्यों का समान भाग लेकर क्वाथ बना, शहद मिला कर पीने से, पाण्डु रोग तथा कामला दोनों नष्ट होते हैं ॥ २७ ॥

देवदालीफलरसो नस्यतो हन्ति कामलाम् ।
सन्देहो नात्र संफुल्लनीलोत्पलविलोचने ! ॥२८॥

भा० टी०—हे नीलोत्पल के तुल्य नेत्रवाली ! देवदाली के फल के स्वरस नस्य के (सूँघने) से कामला रोग नष्ट होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥२८॥

गिरिमृद्रात्रिधात्रिणामञ्जनं कामलापहम् ।
इदं न हि भवेन्मिथ्या शपथस्तु तवाङ्गने ! ॥२९॥

भा० टी०—गेरु, हलदी, आँवला, इनका चूर्ण कज्जल के समान बना कर आँजने से कामला रोग नष्ट होता है। हे अङ्गने ! मैं तेरी कसम खाकर कहताहूँ कि यह निष्फल नहीं हो सकता अर्थात् लाभकारी है॥२९॥

अये मनोज्ञकुण्डले ! स्फुरन्मुखेन्दुमण्डले !
गवां पयः सनागरं निहन्ति कामलाभरम् ॥३०॥

भा० टी०—हे सुन्दर कर्णफूल वाली ! चन्द्रमा के समान मुखवाली ! सोंठ का चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन करने से कामला रोग नष्ट होता है ॥३०॥

योनिशूलप्रतीकारमाह—

पिचुमन्दरसेन मिश्रितैः पिचुमन्दाऽनिलशत्रुबीजकैः ।
घटितां वटिकां भगान्तरे भगशूलप्रशमाय धारयेत्३१

भा० टी०—नीम के बीज, अरण्डी के बीज, इन दोनों का बारीक चूर्ण कर नीम के पत्तों के रस की भावना दे। इसके पश्चात् बहेड़े के समान इसकी गोली बना ले, इन गोलियों को योनि में रखने से योनि शूल नष्ट होता है ॥३१॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

तरुण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिः सनागरम् ।
शिवशत्राभिधां बाधां योनिस्थां हन्ति सत्वरम् ॥३२॥

भा० टी०—हे युवती ! इन्द्रायन की जड़ और सोंठ इन दोनों औष-धियों को बारीक चूर्ण कर के फिर उसमें आवश्यकतानुसार बकरी का घी मिला द । इसका लेप योनि के भीतर करने से योनि का शूल नष्ट होता है ॥ ३२ ॥

स्तन्यदुष्टिप्रतीकारमाह—

गोपी-वृकी-दारु-किरात-मूर्व्वा-
तिक्ताऽमृता-विश्व-घनेन्द्रजानाम् ।
काथोऽयमुक्तो मृगलोचनानां
दुष्टस्य दुग्धस्य विशोधनाय ॥३३॥

भा० टी०—सारिवा, पाठा, देवदारु, मूर्व्वा, कुटकी, गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, इन्द्रजौ इन औषधियों को समान भाग ले, क्वाथ करे । इसके सेवन से स्त्रियों का दूषित दूध शुद्ध होता है ॥ ३३ ॥

प्रदरप्रतीकारमाह—

कटङ्कटेरीरसजाब्दवासा-
भूनिम्बभल्लीतिलजः कषायः ।
क्षौद्रान्वितश्चञ्चललोचनानां
नानाविधानि प्रदराणि हन्यात् ॥३४॥

भा० टी०—दारुहलदी, रसौत, नागरमोथा, अडूसा, चिरायता, भिलावा, तिल, इन को समान भाग लेकर क्वाथ कर शहद मिलाकर पीने से हर प्रकार का प्रदर रोग नष्ट होता है ॥ ३४ ॥

कुवलयदलनेत्रे ! तण्डुलीयस्य मूलं
रसजमपि समांशं भेषजद्वन्द्वमेतत् ।
हिमकरमुखि ! युक्तं तण्डुलाम्भोमधुभ्यां
प्रदरदरमुदीर्णं सुन्दरीणां निहन्ति ॥३५॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे कमल पत्र के समान नेत्रवाली ! चौलाई की जड़ और रसौत इन दोनों औषधियों को समान भाग लेकर चूर्ण कर ले। हे चन्द्रमा के तुल्य मुख वाली ! इस चूर्ण को चावल के पानी और मधु (शहद) के अनुपान के साथ सेवन करने में सुन्दरी स्त्रियों का भयानक प्रदर रोग शीघ्र नष्ट होता है ॥ ३५ ॥

रजावरोधस्य प्रतीकारमाह—

मूलं गवाक्ष्याः स्मरमन्दिरस्थं पुष्पावरोधस्य वधं करोति अभर्तृकाणां व्यभिचारिणीनां योगोऽयमेव द्रुतगर्भपाते ३६

भा० टी०—जिस स्त्री को मासिकधर्म विना गर्भस्थिति के वन्द हो जावे उसे इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण योनि में रखने से मासिक धर्म फिर से होने लगता है। जो विधवा स्त्रियां व्यभिचारिणी, पथभ्रष्ट स्त्रियां भी गर्भ स्थिति हो जाने के पश्चात् गर्भपातनार्थ इसे प्रयोगमें लावें तो यह उनकी कामना की पूर्ति करता है ॥३६॥

सुखप्रसवस्योपायमाह—

मध्वाज्ययष्टीमधुलुङ्गमूलं
निपीय सूते सुमुखी ! सुखेन ।
सुतण्डुलाम्भःसितधान्यकल्क-
पानाद्वमिर्गच्छति गर्भिणीनाम् ॥३६॥

भा० टी०—हे सुन्दर मुखवाली ! गर्भवती स्त्री यदि मुलहठी और विजौरा नींबू का चूर्ण विषम मात्रा में शहद और घी में मिला कर सेवन करे तो उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है। यदि गर्भिणी स्त्री को उलटी आती हो तो धनिये का चूर्ण शक्कर मिला कर चावल के पानी के अनुपान के सथ लेना चाहिए ॥३६॥

धान्याब्दाऽम्बुद्धयाऽरलवऽमृतविषबलारेणुदुस्पर्शशीतं गर्भिण्याः सूतिकाया अपि रुधिररुगामातिसारज्वरभ्रम् मुस्ताशृंगीविषाणां प्रशमयति रजःसेवितं क्षौद्रयुक्तं बालानां वान्तिकासज्वरमतिविषजं क्षौद्रयुक्तं रजो वा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—धनियां, नागरमोथा, खश, नेत्रवाला, अरलू की छाल, गिलोय, अतीस, खरैटी, पित्तपापड़ा, जवासा, लालचन्दन इनका चूर्ण ठंडे जल के साथ सेवन करने से गर्भिणी तथा प्रसूता के रक्तविकार, आमातिसार तथा ज्वर नष्ट होते हैं। नागरमोथा, कांकड़ासिंगी, और अतीस का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से दूधमुँहे बच्चों की खांसी, उलटी, ज्वर आदि विकार दूर होते हैं ॥३८॥

शिशोरतिसारस्योपक्रममाह—

कुमारातिसारे कषायः समंगा-
मदासारिवारोध्रजः क्षौद्रयुक्तः ।
मदारोध्रबिल्वाब्दमञ्जिष्ठबाला-
कषायोवलेहोऽथ वा क्षौद्रयुक्तः ॥३८॥

भा० टी०—मजीठ, धाय के फूल, सारिवा, लोध, इन चारों औषधियों का काढ़ा शहद मिला कर पिलाने से बच्चों का अतीसार दूर होता है। अथवा-धाय के फूल, लोध, बेलगिरी, नागरमोथा, मंजीठ, नेत्रवाला, इनका क्वाथ या अवलेह शहद मिला कर सेवन करने से बच्चों का अतीसार दूर होता है ॥३८॥

इतिश्रीदिवाकरसुनुलोलिम्मराजविरचिते वैद्यजीवने तृतीयो विलासः ॥३॥

चतुर्थो विलासः ।

विद्वल्ललामलोलिम्मनृपतेर्वाग्विलासतः ।
तृप्तिर्न जायते स्वामिन् ! पुनः किञ्चिन्निरूपय ॥१॥

भा० टी०—रत्नकला कहती है-हे विद्वानों में श्रेष्ठ लोलिम्मराज ! आपकी जो सुन्दर वाणी है उसके सुनने से अभी तृप्ति नहीं हुई है। इसलिए हे स्वामिन ! कुछ आगे और बतलाइये ॥१॥

क्षयरोगचिकित्सामाह—

क्षयोत्पत्तिविनाशाय सिंहास्यः सेव्यतां सदा ।
बहूनामस्य विश्वासो जातः कमललोचने ! ॥२॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हे कमलनयनी ! क्षयरोग के नष्ट करने के लिए अडूसा का सेवन बहुत अच्छा है । बहुतों को इस की उपयोगिता पर विश्वास हुआ है । चक्रपाणि ने लिखा है—

वासायां विद्यमानामाशायां जीवितस्य च ।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ॥ इत्यादि ॥ २ ॥

अयि सुन्दरि ! सुन्दरानने ! रुचिरापाङ्गतरङ्गलोचने !
नवनीतमधूपलाशनादुडुराजोऽपि भवेत् क्षयक्षयः ॥३॥

भा० टी—हे सुन्दरी ! सुन्दर मुखवाली ! सुन्दर नेत्रवाली ! नवनीत (नौनी घी), शहद और मिश्री इन तीनों पदार्थों को मिला कर चाटने से चन्द्रमा का भी क्षय रोग नष्ट होता है ॥ ३ ॥

व्रणरोगस्य प्रतीकारमाह—

अयि कोमलकुन्तलावलीविलसन्मालतिकामनोहरे !
त्रिफलाजनितः कषायकः सहितो गुग्गुलुना व्रणं जयेत् ४

भा० टी०—अयि सुन्दर केश कलाप एवं मालती के पुष्प के समान सुन्दरी ! गुग्गुलके साथ त्रिफला का क्वाथ पीनेसे व्रण रोग दूर होता है ।

मेदप्रतीकारमाह—

मदनज्वरकारिनामधेये !
रसिके ! रत्नकले ! प्रभातकाले ।
शिशिराम्बु ! पिबन्मधुप्रयुक्तं
गणनाथोऽपि भवेत्किलास्थिशेषः ॥५॥

भा० टी०—हे कामदेवको भी ज्वर करनेवाले नामवाली ! हे रसिक स्त्री ! हे रत्नकला ! प्रातः काल शहद ठंडे जल में मिला कर पान करने से गणेश के समान स्थूल उदर वाला व्यक्ति भी कृश हो जाता है ॥ ५ ॥

क्रिमिरोगस्य प्रतीकारमाह—

त्रिकटुत्रिफलाकलिङ्गनिम्बत्रिवृदुग्राखदिरोद्भवः कषायः
पशुमूत्रसमन्वितो निपीतः कृमिकोटीरपि हन्तिवेगतोऽयम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आँवला, इन्द्रजौ, नीम की छाल, निशोथ, बच, खैरसार इनको समान भाग ले क्वाथ बना कर गोमूत्र मिला कर सेवन करने से पेट के सब क्रिमि नष्ट हो जाते हैं ॥६॥

मुखपाकप्रतीकारमाह—

जातीप्रवाल-त्रिफलायवास-
दार्वीत्रियामाऽमृत-गोस्तनीनाम् ।
कषायकः क्षौद्रयुतो निहन्ति
मुखस्य पाकं मुखपङ्कजस्थम् ॥७॥

भा० टी०—मालती के पत्ते, हरड, बहेड़ा, आमला, जवासा, दारुहलदी, गिलोय, दाख, इनको समान भाग लेकर क्वाथ करे। इस क्वाथ में शहद मिला कर कुल्ले करने से मुँह के छाले दूर होते हैं ॥ ७ ॥

अम्लपित्तस्य चिकित्सामाह—

भूनिम्ब-निम्ब-त्रिफला-पटोली-
वासाऽमृता-पर्पट-भृङ्गराजैः ।
क्वाथो हरेत् क्षौद्रयुतोऽम्लपित्तं
चित्तं यथा वारवधूविलासः ॥८॥

भा० टी०—चिरायता, नींव की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, पटोलपत्र, अड़ूसा, गिलोय, पित्तापापड़ा, भांगरा, इनको समान भाग लेकर क्वाथ करे। इस क्वाथ को शहद के साथ सेवन करने से अम्लपित्त नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार वारवधू (वेश्याएँ) कामी पुरुषों के चित्त को अपनी ओर खींच लेती हैं ॥८॥

प्रमेहस्य चिकित्सामाह—

स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारदाम-
प्रकामाभिरामस्तनद्वन्द्वरम्ये !
हरिद्रारजोमाक्षिकाभ्यां विमिश्रः
शिवायाः कषायः प्रमेहापहारी ॥९॥

भा० टी०—हे मन्दार के पुष्पों से रमणीक और सुन्दर कुचवाली !

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

हलदी का चूर्ण और मधु (शहद) आंवले के स्वरस या क्वाथ में मिला कर पीने से प्रमेह रोग नष्ट होता है ॥९॥

समधुश्छिन्नास्वरसो नानामेहनिवारणः ।
वदन्ति भिषजः सर्वे शरदिन्दुनिभानने ! ॥१०॥

भा० टी०—हे शरच्चन्द्र के समान मुखवाली ! गुडूची का स्वरस शहद मिला कर पीने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं, ऐसा सब वैद्यों का कथन है ॥१०॥

वातरक्तस्यौषधमाह—

रतिकेलिकलाकुशले ! विलसद्वलये ! मलयेन समानकुचे !
अमृताव्रतती रुबुतैलवती दलयेदनिलास्रमुदारतरम् ॥११॥

भा० टी०—हे विलासिनी ! हे कङ्कणवाली ! हे मलय पर्वत के समान स्थूल तथा कठोर कुचवाली ! एरण्ड तैल के साथ गिलोय का क्वाथ पीने से वातरक्त रोग शीघ्र नष्ट होता है ॥११॥

मधूकाऽरुणा-गोपिका-देवधूपैः
शृतं वातरक्तापहं पिण्डतैलम् ।
कषायः सहैरण्डतैलेन पीत-
स्तथैरण्ड-सिंहास्य-वत्सादनीनाम् ॥१२॥

भा० टी०—मुलहठी, मंजीठ, सारिवा, राल इनसे सिद्ध किया हुआ यह पिण्ड तैल वातरक्त को नष्ट करता है। अथवा अंडी के बीज, अडूसा, गिलोय इनका क्वाथ अंडीका तेल मिला कर पीनेसे वातरक्त नष्ट होता है।

विसूचिकोपचारमाह—

लशुन-जीरक-सैन्धव-गन्धक-
त्रिकटु-रामठ-चूर्णमिदं समम् ।
सपदि निम्बुरसेन विसूचिकां
हरति भो रतिभोगविचक्षणे ! ॥१३॥

भा० टी०—लहसन, जीरा, सेंधानमक, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

हींग इनका चूर्ण करले । इस चूर्ण को नीबू के रस के अनुपान से लेने से हे रतिक्रीडाकुशले ! शीघ्र ही विसूचिका (हैजा) नष्ट होती है। यदि विसूचिका के प्रारंभ में इसको सेवन किया जावे तो बहुत शीघ्र अपना चमत्कार दिखलाता है ॥१३॥

रुग्-लाजाऽब्ज-वटप्ररोह-मधुकैर्मध्वन्वितैः कल्पिता
उग्रामाशु तृषां भृशं प्रशमयेदास्यान्तरस्था वटी ।
एला-लाज-लवंग-चपला-स्त्री-कोलमज्जाऽम्बुदश्रीखण्ड'
मधुखण्डयुक् प्रशमयेद्वान्ति त्रिदोषोद्भवाम् ॥१४॥

भा० टी०—यदि विसूचिका वाले रोगीको प्यास अधिक लगे तो कूठ, धान की खील, कमलगट्टा, बड़ की जटा, मुलहटी इनको समान भाग लेकर पीस कर उसमें शहद मिलाकर गोली बनालें। इनको मुख में रख कर चूसे तो प्यास दूर होती है। बड़ी इलायची, धान की खील, लौंग, नागकेसर, पीपल, प्रियंगु, बेर की गुठली की मिंगी, नागर मोथा, सफेद चन्दन इनको समान भाग ले चूर्ण करले। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर सेवन करने से हैजे की उलटियाँ बन्द होती हैं ॥१४॥

निदाघोपक्रममाह—

रमारम्याकारे ! चतुरवचने ! चारुचिकुरे !
विमूल्यालङ्कारे ! करतललसन्नीलनलिने !
निदाघः सञ्जातस्तव किमु सरोजन्मकदली-
दलैः क्लृप्ते तल्पे लघु स्वपिहि साहित्यनिपुणे ! ॥१५॥

भा० टी०—हे लक्ष्मीवत् सुन्दरी ! हे प्रिय भाषिणी तथा सुन्दर केशवती ! हे बहुमूल्य वस्त्राभरण वाली ! हे हथेली पर प्रकाशित नील कमल की रेखावाली ! क्या तुझे पसीना आ रहा है ? यदि तुझे गरमी मालूम पड़ती है तो हे काव्यरचनाप्रवीणे ! कमल के तथा केलेके पत्रों से निर्मित शय्या पर शयन कर ॥१५॥

पामोपचारमाह—

रस-द्विजीर-द्विनिशा-मरीच-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

सिन्दूर-दैत्येन्द्र-मनःशिलानाम् ।
चूर्णीकृतानां घृतमिश्रितानां
त्रिभिः प्रलेपैरपयाति पामा ॥१६॥

भा॰ टी॰—पारा, सफेद जीरा, काला जीरा, हलदी, दारुहलदी, काली मिरच, सिंदूर, गन्धक, मैनसिल इनका चूर्ण बनाकर घी के साथ मिलाकर सिर्फ तीन वार लेप करने से खुजली नष्ट होती है ॥१६॥

विपादिकाप्रतीकारमाह—

मदन-सैन्धव-गुग्गुलु-गैरिका-
ऽऽज्यमधु-बालक-पङ्कविलेपनात् ।
स्फुटितमप्यखिलं चरणद्वयं
विकचतामरसप्रतिमं भवेत् ॥१७॥

भा॰ टी॰—मोम, सेंधानमक, गूगल, गेरु, घी, शहद, नेत्रवाला, इनको मिलाकर पैरों में लेप करने से बिवाई दूर होती है और पैर कमल के समान सुन्दर हो जाते हैं ॥१७॥

अर्शोपक्रममाह—

पथ्या-तिलाऽरुष्करकैः समांशै-
र्गुडेन युक्तैः खलु मोदकः स्यात् ।
दुर्नाम-पाण्डु-ज्वर-कुष्ठ-कास-
श्वासं जयेत् प्लीहरुजं च तद्वत् ॥१८॥

भा॰ टी॰—हरड़ उत्तम, तिल, शुद्ध भिलावा, इनको समान भाग लेकर चूर्ण करले । इस चूर्ण से दुगुना गुड मिलावें, और फिर मोदक बनालें । इसके सेवन करने से ववासीर, पाण्डुरोग, ज्वर, कुष्ठ, खाँसी, श्वास और प्लीहा ये नष्ट होते हैं ॥१८॥

गण्डमालोपचारमाह—

भल्लात-कासीस-हुताश-दन्ती-
मूलैर्गुडस्नुग्रविदुग्धदिग्धैः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

लेपोचितैर्गच्छति गण्डमाला
समीरवेगादिव मेघमाला ॥१९॥

भा० टी०—भिलावा, कासीस, चीता, जमाल गोटे की जड़, इनको बराबर लेकर पीसले । फिर इसमें गुड़, थूहर और आक का दूध मिला कर लेप करे । इस लेप से गण्डमाला इस प्रकार दूर हो जाती है जैसे हवा के वेग से मेघ समूह ॥१९॥

कण्ठामयस्य प्रतीकारमाह—

गोमूत्रेण कृतः कलिङ्ग-कटुका-पाठा-वृषाऽब्दा-मर-
क्वाथः क्षौद्रयुतो निहन्ति सकलान् कण्ठामयानुत्कटान् ।
पाठा-तेजवती-रसाञ्जन-यवक्षारो-पकुल्या-निशा-
देवानां मधुना कृता मुखधृता तद्वद्वटी वर्तते ॥२०॥

भा० टी०—इन्द्रजौ, कुटकी, पाठा, अडूसा, नागरमोथा, देवदारु, इनका क्वाथ गोमूत्र में बनाकर, फिर उसमें शहद मिलाकर पीने से, सब प्रकार के कण्ठरोग दूर होते हैं । पाठा, गजपीपल, रसौत, जवाखार, पीपल, हलदी, देवदारू इनको समान लेकर चूर्ण करले, फिर इसमें शहद मिलाकर गोली बनाले । इन गोलियों के मुख में रखने से कण्ठरोग दूर होते हैं ॥२०॥

मन्दाग्नेश्चिकित्सामाह—

'प्राणेश्वर !' प्रियतमे ! 'वद' किं वदामि ?
'तत्कान्त !' तत्किमु मृगाक्षि ! 'यदग्निकारि ।'
सम्यक्छृणु प्रणयिनि ! 'प्रणयिन् ! शृणोमि'
खादेत्सनिम्बुरससैन्धवशृङ्गवेरम् ॥२१॥

भा० टी०—हे प्राणनाथ ! कहो । हे प्रियतमे ! बतलाओ क्या कहूँ ? हे कान्त ! अग्नि को बढ़ाने वाला कौन उपाय है ? हे मृगनयनि ! वह उपाय सन्देह रहित होकर सुनो । हे स्वामिन् ! सुनती हूँ । अदरख और सेंधानमक दोनों नींबू के रस में मिलाकर भोजन के पूर्व सेवन करने से मन्दाग्नि दूर होती है, अग्नि बढ़ती है ॥२१॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

अश्मर्यादिरोगाणां चिकित्सामाह—

हिङ्गु-क्षारद्वय-सैन्धव-सौवर्चल-विड्-पिप्पली-
ग्रन्थिक-चित्रक-चव्य-मरिच-कुस्तुम्बरी-वर्बरी-
तिन्तिडी-षड्ग्रन्थाऽजमोदाऽम्लवेतस-पुष्करमूल-
नागर-करञ्ज-जीरक-हरीतकी-वृकी-हपुषाभिः ।
विरचितं चूर्णमिदमश्मरी-हृदय-गलरोग-
विबन्धाऽऽध्मान-हिक्का-वर्ध्म-गुदज-गुल्म-सकल-
शूल-प्लीह-पाण्डु-श्वसन-कसन-दहन-
सदन-वदनविरसताविरतये समर्थतरम् ॥२२॥

भा० टी०—हींग, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानमक, कालानमक, खारी-नमक, पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, मिरच, धनियाँ, इमली, वच, अज-वायन, अमलबेंत, पोहकरमूल, सोंठ, करंज, जीरा, हरड़, पाठा, हाऊबेर इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर ले। इस चूर्ण को जल के साथ सेवन करने से पथरी का रोग, हृदय का रोग, गल रोग, वायु का रुकना, पेट फूलना, हिचकी, बर्ध्म (वंक्षण सन्धि में उत्पन्न होने वाली सूजन) बवासीर, शूल, वायु गोला, तिल्ली, पाण्डु रोग, श्वास, कास, मन्दाग्नि, मुँह की विरसता ये सब दूर होते हैं ॥२२॥

अग्निमान्द्यस्य प्रतीकारमाह—

हिंगु-व्योषाऽजमोदा-द्विजरण-लवणं प्राग्भजेत्साज्यभुक्तं
कुर्याज्जाज्वल्यमानं ज्वलनमनिलजं गुल्ममेतन्निहन्ति ।
वृक्षाम्लाम्लाग्नि-पथ्यात्रिकटु-पटु-विडंजन्तुजिज्जीरयुग्मं
दीप्यौ सौवर्चलं चाचलमपि सकलं भस्मसाच्चर्करीति२३

भा० टी०—(हिंगाष्टक चूर्ण) हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन सफेद जीरा, काला जीरा सेंधानमक, इनको समान भाग ले चूर्ण कर ले। इस चूर्ण को भोजन के प्रथम ग्रास में घृत मिलाकर सेवन करे। इससे जठराग्नि दीप्त होती है, वायुगोला नष्ट होता है।

अथवा-इमली, अमलबेंत, चीता, हरड़, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

नमक, खारी नमक, बायबिडंग, काला जीरा, सफेद जीरा, अजवायन, काला नमक इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर लें। इसके सेवन से कठिन से कठिन पदार्थ पचते हैं ॥२३॥

शुण्ठी बाणमिता कणार्णवमिता दीप्या-यवान्योः क्रमात्-
भागानां त्रितयं द्वयं च लवणाद्भागः शिवैतत्समाः ।
कोष्ठाऽऽटोप-रुगाऽऽम-गुल्म-मलहृल्लोलिम्बराजोदित-
श्चूर्णोऽग्नीनपि भस्मसात्प्रकुरुते किं भोजनं भोजनाः!२४

भा० टी०—सोंठ, पाँच भाग, पीपल चार भाग, अजमोद तीन भाग, अजवायन दो भाग, सेंधा नमक एक भाग इन सब के बराबर हरड़ ले। फिर इन सब को बारीक पीस ले। इसके सेवन से पेट की गुड़-गुड़ाहट, शूल, आम, वायुगोला, मल के रोग, ये सब नष्ट होते हैं। यह चूर्ण कठिन भोजन को भी हजम कर देता है; साधारण भोजन की तो बात ही क्या ? ॥२४॥

विद्रधिप्रतीकारमाह—

शिग्रु-दीप्य-वरुण-द्वियामिनी-कुञ्जराशनकृतः कषायकः ।
बोलचूर्णसहितोन्तरस्थितं विद्रधिं प्रशमयेदसंशयम् ॥२५॥

भा० टी०—सहजने की छाल, अजवायन, बरने की छाल, दारुहलदी, हलदी, पीपल की छाल, इनका क्वाथ कर ले। फिर उसमें गन्धक का चूर्ण मिलाकर पान करने से विद्रधि (हृदय का फोड़ा) नष्ट होती है॥२५॥

हृद्रोगचिकित्सामाह—

कमलकुड्मलकल्पपयोधरद्वयसमाहितहारमनोहरे !
हृदयरुक्षु हितं घृतमर्जुनस्वरसकल्कसुसाधितमङ्गने !२६।

भा० टी०—हे कमल के मुकुल तुल्य कुच पर सुशोभित हारवाली कान्ते ! अर्जुन के स्वरस और कल्क से सिद्ध किया घृत हृदय के रोगों में बहुत लाभदायक है। हृदय के शूल को भी शीघ्र नष्ट करता है ॥२६॥

दन्तरोगस्यौषधमाह—

सोयं सुगन्धिमुकुलो बकुलो विभाति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

वृक्षाग्रणीः प्रियतमे ! मदनैकबन्धुः ।
यस्य त्वचैव चिरचर्वितया नितान्तम्
दन्ता भवन्ति चपला अपि वज्रतुल्याः ॥२७॥

भा० टी०—हे प्रिये! वृक्षों में श्रेष्ठ वकुल (मौलश्री) जिसकी कलियां अभी खिली हुई हैं और जो कामदेव का दूसरा भाई है वही वकुलका वृक्ष तेरे सामने ही शोभा दे रहा है। इसकी छाल वहुत समय तक चवाते रहने से हिलते हुए दांत वज्र के समान कठोर हो जाते हैं। नित्य प्रति इसका प्रयोग करना चाहिए ॥२७॥

रक्तपित्तप्रतीकारमाह—

द्राक्षापथ्याकृतः क्वाथः शर्करामधुमिश्रितः ।
श्वासकासहरो देयो रक्तपित्तप्रशान्तये ॥२८॥

भा० टी०—दाख और हरड़ इन दोनों को समान भाग लेकर क्वाथ करें, फिर इस क्वाथ में शक्कर और शहद मिलाकर पान करें। इसके सेवन से रक्तपित्त तथा श्वास, कास नष्ट होते हैं ॥२८॥

भिन्दन्ति के कुंजरकर्णपालीःकिमव्ययं वक्ति रते नवोढा।
सम्बोधनं नुः किमु रक्तपित्तं निहन्ति वामोरु!वद त्वमेव।

भा० टी०—मतमत्तंग (हाथियों) के गण्डस्थलों को कौन नष्ट करते हैं ? सिंह। नवविवाहिता स्त्री प्रथम सम्भोगके समय कौनसा अव्यय कहती हैं ? 'न'। 'नृ' शब्द के सम्बोधन में कौन सा रूप होता है ? 'नः'। रक्त पित्त का कौनसी औषधि शमन करती है, इसलिए हे सुन्दर जंघा वाली ! तूही वतला। [स्त्री ने उत्तर दिया कि 'सिंहाननः'] अर्थात् वासा का क्वाथ रक्त पित्त को नष्ट करता है ॥२९॥

हिक्काप्रतीकारमाह—

विश्वा-कणा-शिवाचूर्णः ससितः समधुः स्मृतः ।
नस्यवद्विश्व - गुडयो - हिंक्का - धिक्कार - कारकः ॥३०॥

भा० टी०—सोंठ, पीपल, आँवला इन तीनों औषधियों का चूर्ण

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

मिश्री और शहद मिला कर चाटने से हिचकी का तिरस्कार होता है (अर्थात् नष्ट होती है) ॥३०॥

भ्रमप्रतीकारमाह—

दुरालभाकषायस्य घृतयुक्तस्य सेवनात् ।
भ्रमः शाम्यति गोविन्दचरणस्मरणादिव ॥३१॥

भा० टी०—जवासेके क्वाथमें घीमिलाकर पीनेसेभ्रम रोगनष्ट होता है। जैसे परमात्माके चरणका स्मरण करनेसे अविद्या रूपी भ्रमनष्ट हो जाता है।

शोकप्रतीकारमाह—

अयि रत्नकले! कुरु मा कलहं कलहंसकलत्रसलीलगते!
शृणु मद्वचनं,'वद वैद्यमणे!'मदिरा मदिराक्षि!शुचंशमयेत

भा० टी०—हे रत्नकले ! विवाद मतकरो, हे हंसिनी के समान धीरे २ चलने वाली ! मेरी बात सुन । हे वैद्यवर ! कहो, हे मदिराक्षि ! जो व्यक्ति शोकसे पीड़ितहो उसे मदिरा पान करानी चाहिये । यह शोकको नष्ट करती है।

ऊरुस्तम्भप्रतीकारमाह—

पुनर्नवा-नागर-दारु-पथ्या-भल्लातकच्छिन्नरुहाकषायः ।
दशांघ्रिमिश्रः परिपेय ऊरुस्तंभेऽथ वा मूत्रपुरप्रयोगः ॥

भा० टी०—सांठी की जड़, सोंठ, देवदारु, हरड़, भिलावा, गिलोय, और दशमूल के दशों द्रव्य इन सोलह पदार्थों को समान भाग ले क्वाथ बनाकर पीने से ऊरुस्तम्भ नष्ट होता है। अथवा गोमूत्र में गूगल मिला कर पीने से ऊरुस्तम्भ नष्ट होता है ॥३३॥

मूत्रकृच्छ्रस्य चिकित्सामाह—

सक्षौद्रं कुश-काश-गोक्षुर-शिवा-शम्याक-पाषाणभिद्-
दुःस्पर्शं परिसेवितं परिहरेत् सद्योऽश्मरीं दुस्तराम् ।
एला-पर्वतभिच्छिलाजतु-कणाचूर्णं गुडेनान्वितं
यद्वा तण्डुलधावनोदकयुतं स्यान्मूत्रकृच्छ्रापहम् ॥३४॥

परिषेवितं

भा० टी०—कुस, कास की जड़, गोखरु, जवासा, अमलतास, हरड़, पाषाणभेद इन के क्वाथ में शहद मिला कर पीनेसे पथरी नष्ट होती है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपल इनको समान लेकर चूर्ण कर लेवे। यह चूर्ण ईख के रस के साथ या चावल के धोवन के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होता है ॥३४॥

वासैला-मधुकाऽश्मभेद-चपला-कौन्तीत्रुरैरण्डजः
क्वाथः साश्मजतुर्जयत्यतितरां कृच्छ्राश्मरीशर्कराः।
कृच्छ्रे दाहरुजाविबन्धसहिते क्वाथोश्मभिद्गोक्षुरा-
नन्तारग्वध-चेतकी-विरचितो मध्वन्वितः शस्यते ॥३५॥

भा० टी०—अडूसा, छोटी इलायची, मुलहठी, पाषाणभेद, पीपल, रेणुका, तालमखाना, अरण्डी की जड़, इन आठ औषधियों के क्वाथ में शिलाजीत डाल कर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शर्करा रोग नष्ट होते हैं। पाषाणभेद, गोखरू, जवासा, अमलतास, हरड़ इनके क्वाथ में शहद डाल कर पीने से पेशाब की कड़क व जलन दूर होती है ॥३५॥

व्यङ्गचिकित्सामाह—

न्यग्रोधाङ्कुर-कुष्ठ-रोध्र-विकसा-श्यामा-मसूराऽरुण-
श्रीखण्डैः पयसान्वितैर्विरचितं व्यङ्गघ्नमुद्वर्तनम्।
लिप्तं सप्तदिनं मसूररजसा सर्पिःपयः श्यामता-
वक्त्रं शारदचन्द्रसुन्दरतरं व्यंगस्य भङ्गाद्भवेत् ॥३६॥

भा० टी०—वड़ के अंकुर, कूठ, लोध, मञ्जीठ, प्रियंगु, मसूर, लाल चन्दन, इनको दूध में पीस कर मुँह पर उबटन करने से मुखकी श्यामता झांई आदि दूर होते हैं। अथवा मसूर का आटा, घी और दूध में मिला कर, लगाने से ७ दिन में मुख की श्यामता दूर होती है और काला मुँह भी शरद ऋतु की पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान हो जाता है ॥३६॥

इङ्गुद्याः फलमज्जको जलयुतो लेपो मुखे कान्तिदो
लोध्रोग्रा-धनिकं निहन्ति पिटकांस्तारुण्यजाँल्लेपनात्।
हार्यं रक्तमरुंषिकारुजि हितो मूत्रेण लेपोऽथ वा
पिण्याकस्य नवेतरस्य शकृतः पादायुधस्य ध्रुवम्॥ ३७॥

भा० टी०—हिंगोट फल की मिंगी का चूर्ण पानी में मिलाकर लेप

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

करने से मुख कान्तिवान् होता है । लोध, वच, धनियां इन्हें जल में पीस कर मुख पर लेप करने से मुंहासे (जवानी में दुष्ट रक्त के कारण मुंहपर फुन्सियां हो जाती हैं जिन्हें डोड़सा कहते हैं) दूर होते हैं । यदि शिर में अरुंषिका (फुन्सी) तथा व्रण हों तो जलौका (जोंक) लगवा कर दूषित खून निकलवा देना चाहिये । अथवा तिल की पुरानी खली को गोमूत्र में पीस कर लेप करने से व्रण आदि नष्ट होते हैं । अथवा कबूतर या मुरगे की बीट लेप करने से शीघ्र लाभ होता है ॥३७॥

शोथस्य चिकित्सामाह—

तैलं शोफमपारमप्यहरेद्वृश्चीर-रास्ना-महा-
भैषज्याऽमर-शुष्कमूलकयुतं बिल्वीरसे साधितम् ।
तद्वद्विश्व-किरात-तिक्तमथवा पाठा-निशा-धावनी-
मुस्ता-जीरक-पञ्चकोल-कोलजरजःसंमिश्रमुष्णाम्बुना ३८

भा० टी०—सफेद पुनर्नवा, रासना, सोंठ, देवदारु, पोहकरमूल इन द्रव्यों के कल्क से तथा मूली के स्वरस से तिल का तेल सिद्ध करे । इस तैल के मर्दन से शोथ (सूजन) दूर होती है । अथवा कन्दूरी के रस में सोंठ और चिरायता को पीस कर लेप करने से शोथ नष्ट होता है अथवा पाठा, हलदी, कटेरी, नागरमोथा, जीरा, पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ, इनका चूर्ण गरम पानीमें मिला कर लेप करनेसे शोथ दूर होता है ॥

शिरोरुक्-कर्णशूलयोः प्रतीकारमाह—

उग्रा-पाठा-पटोलौषध-रुबुकजटा-शिग्रु-दद्रुघ्न-कुष्ठै-
र्धान्याम्लेन प्रपिष्टैः प्रशमयति महामूर्द्धरोगानशेषान् ।
पक्वं पत्रं घृताक्तं रविभवमनले तापितं पीडितं त-
त्तोयं कर्णे च सिक्तं दलयति सकलं कर्णशूलं समूलम् ।३९

भा० टी०—वच, पाठा, पटोलपत्र, सोंठ, अरण्डी की जड़, सहँजने की छाल, पमाड़ के बीज, कूठ, इनको कांजी में पीस कर लेप करने से सब प्रकार के शिरोरोग दूर होते हैं । आक के पत्ते पर घी लगा कर आग पर गरम करे और फिर इसका रस कान में निचोड़ दे तो कान का दर्द नष्ट होता है ॥३९॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

वातोपचारमाह—

घृततीक्ष्णयुतः सुरसास्वरसो लघुराजमृगाङ्क इतिप्रथितः
अपहन्त्यनिलान्सबलान्बहुलान्निजभक्तरिपूनिव चक्रधरः

भा० टी०—तुलसी का स्वरस, घी, कालीमिरच इन तीनों के मिलाने को लघुराजमृगाङ्क कहते हैं। इसके सेवन करने से वलवान् वातरोग भी उसी प्रकार नष्ट होते हैं जिस प्रकार भगवान् विष्णु अपने भक्तों के शत्रुओं को नष्ट करते हैं ॥४०॥

चूर्णाःकषाया गुटिका घृतानि तैलानि भागेन च योजितानि
विलासिनां वातविनाशनाय विलासिनीनांपरिरम्भणानि

भा० टी०—चूर्ण, क्वाथ, गुटिका, घृत, तैल आदि जब लाभप्रद न हों तब विलासी पुरुष वायु के नष्ट करने के लिये विलासिनी स्त्रियों के साथ आमोद प्रमोद आलिङ्गन कुश्ती आदि करें ॥४१॥

पित्तौषधमाह—

अमृतसमृतजं सितासमेतं
गुणवति ! पित्तमपाकरोति सद्यः।
तरुण इव नितम्बिनीनितम्बा-
म्बरमतनुज्वरजर्जरीकृताङ्गः ॥ ४२ ॥

भा०टी०—हे गुणवति ! गिलोयके स्वरस में मिश्री मिला कर पीने से पित्तकी प्रवलता उसी प्रकार तुरत दूर हो जाती है जैसे कामसे पीडित युवा पुरुष नितम्बिनी स्त्रीके नितम्बके वस्त्रको तुरत हटा देनेमें समर्थ होता है।

कफौषधमाह—

कफाद्भवति भो भीरु ! च्छिन्नाक्वाथो मधूदरः।
अस्यार्थो लक्ष्यते नैव तन्वङ्गि ! तव मध्यवत् ॥४३॥

भा० टी०—हे भयशीले ! गिलोय का क्वाथ शहद मिला कर पीने से कफ की प्रवलता नष्ट होती है। इसका अर्थ इस प्रकार नहीं मालूम पड़ता जैसे तुम्हारी पतली कमर ॥४३॥

इति श्रीमल्लोलिम्मराजकृतौ वैद्यजीवने राजयक्ष्माधिकार-
श्चतुर्थो विलासः ॥४॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पंचमो विलासः ।

वाजीकरणमाह—

ताम्बूलं मधु कुसुमस्रजो विचित्राः
कान्तारं सुरतरु वा विलासवत्यः ।
गीतानि श्रवणहराणि मिष्टमन्नं
क्लीबानामपि जनयन्ति पञ्चवाणम् ॥ १ ॥

भा० टी०—ताम्बूल का सेवन, उत्तम मद्यों का पान, सुन्दर पुष्पों की माला का धारण करना, देवताओं को भी प्रिय लगने वाले चम्पा कदम्ब मोर छली आदि वृक्षोंसे युक्त सुन्दर वन, नवीन विलासिनी स्त्रियां जो षोडश तथा अष्टादश वर्षीयाँ हों, हाव भाव कटाक्ष आदि क्रियाओं में निपुण हों, अच्छे २ सुमधुर गायन, जो मनुष्यों के चित्त को लुभाने वाले हों, मधुर तथा वीर्य्य को वढ़ाने वाला मधुर प्राय, षड्रस युक्त भोजन, ये सब उपाय नपुंसकों के भी काम जाग्रत करते हैं। फिर जवान पुरुषों की तो बात ही क्या ?

यहां पर यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि वाजीकरण है क्या ? वैद्यक शास्त्र के आचार्य्यों ने लिखा है:—यद्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजिवत् सुरतक्षमम् । तद्वाजीकरमाख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैरिति ॥ अर्थात् जिस पदार्थ के सेवन से मनुष्य घोड़े के समान ही मैथुन करने में समर्थ हो सके उसे वाजीकरण कहते हैं। यों तो वाजीकरण पदार्थ सभी को हितकर है पर इनको विशेष हितकर है। जैसा कि एक आचार्य्य ने लिखा है—स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् । योषित्प्रसंगात् क्षीणानां क्लीबानामल्परेतसाम् । हिता वाजीकरा योगाः प्रीत्यपत्यफलप्रदाः । वृद्ध पुरुष हो, मैथुन की इच्छा अधिक करते हों, जो स्त्रियों में अधिक अनुरक्त हों, जो स्त्रियों में अधिक रमण करने से दुर्बल हो गये हों, नपुंसक हों, अल्प वीर्य वाले हों, उनको वाजीकरणयोग बहुत हितकारी है वे प्रीति तथा सन्तान देने वाले हैं ॥१॥

सहितेन घृतेन मधुना मधुकं
परिसेचितं पिबति योऽनुपयः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

नवसुभ्रुवां सुखकरः सततं स
बहुवीर्यपूरपूरितो भवति ॥२॥

भा० टी०—जो मनुष्य मुलहठी का चूर्ण, विषम मात्रा में शहद और घी मिला सेवन करता हुआ ऊपर से दूध पीता है, वह नवयुवतियों को अत्यन्त सुख पहुंचाता है अर्थात् यह मैथुन शक्ति बढ़ाता है। इसके सेवन से वीर्य्य बहुत बढ़ता है। परन्तु कुछ समय तक पथ्य से रहकर इस प्रयोग का सेवन करना चाहिये॥२॥

अमृताऽऽमलकत्रिकण्टकानां
हविषा शर्करया निषेवणेन।
अजरा अमरा अपारवीर्या
अलकेशा अदितेः सुता बभूवुः॥३॥

भा० टी०—गिलोय, आंवला, दक्षिणी गोखरू इनको समान भाग लेकर चूर्ण करले, और फिर घी और शक्कर मिलाकर इसका सेवन निरन्तर करे तो इससे जल्दी बुढ़ापा नहीं आता, अपार वीर्य बढ़ता है, मनुष्य देवताओं के समान पराक्रम वाला होता है॥३॥

उच्चटा-मर्कटी-गोक्षुरैश्चूर्णितैः
शर्करादुग्धसम्मिश्रितैः पाचितैः।
सेवितैर्वार्द्धके मानवो मानिनी-
मानमुच्छेदयेत् किं पुनर्यौवने? ॥४॥

भा० टी०— उटंगन के बीज, कौञ्च के बीज, दक्षिणी गोखरु, इनको समान भाग लेकर चूर्ण करले। इस चूर्ण में दूध मिला कर क्षीर-पाक की विधि से पका लें।

क्षीरपाकविधमाह—द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम्। क्षीरावशेषकर्त्तव्यः क्षीरपाको त्वयं विधिः—अर्थात् औषधि से अठगुना दूध, दूध से चौगुना पानी मिलाकर पकावें, दूध मात्र शेष रहने पर उतार लें, क्षीर पाक की यही विधि है।

दूधसिद्ध होने पर शर्करा मिला कर पान करें। इसके सेवन से वृद्ध

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

मनुष्य भी तरुणी स्त्रियों के मद को भञ्जन करता है अर्थात् यह बहुत ही श्रेष्ठ है, युवा पुरुष को तो बात ही क्या ? अर्थात् युवा पुरुषों को अतिशय शक्ति प्रदान करता है ॥४॥

भुक्त्वा वरीं क्षीरयुतां विलासी
भुंक्ते शतं सुन्दरि ! सुन्दरीणाम् ।
त्वं तावदेकासि मया तु साद्य
भुक्ता रतौ पश्य कुतूहलं मे ॥५॥

भा०टी०—हेरूपवति ! भोगी पुरुष शतावरीका चूर्ण दूधके साथ सेवन करनेसे सैकड़ों स्त्रियोंके साथ भोग विलास करते हैं । अर्थात् यह अत्यन्त बाजीकरण है । हे प्रिये ! वही शतावरीका चूर्ण आज मैंने सेवन किया है । तू तो अकेली ही है, मुझे शत वार रमण करना है, इसलिये विलास क्रीड़ा में तू मेरे कुतूहल को देखना * ॥५॥

चूर्णो घृतक्षौद्रयुतो रसैः स्वै-
र्विभावितायाा बहुधा विदार्याः ।
निषेव्यमाणोनुदिनं विलासी
दशाङ्गनाभिः सह रंरमीति ॥६॥

भा० टी०—विदारीकन्द का चूर्ण कर, उसमें विदारीकन्द के स्वरस की ७ भावना दे, फिर इस चूर्ण को विषम मात्रा में घी और शहद मिला कर सेवन करे । इस चूर्ण के निरन्तर सेवन करने से भोगी, दश स्त्रियों से रमण करने की, शक्ति प्राप्त करता है ॥६॥

सहितं घृतदुग्धाभ्यां विदारिप्रभवं रजः ।
उदुम्बरमितं भुक्त्वा वृद्धोऽपि तरुणायते ॥७॥

भा० टी०—विदारीकंद का चूर्ण १ तोला घृत मिले हुए दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध पुरुष भी युवा पुरुषों के समान रमण करने में समर्थ होता है ॥७॥

* इसमें जरा अत्युक्ति है इसका ध्यान रखें । लेखक एक साहित्यिक रसिक पुरुष हैं । रचना काव्यमय होनेसे ग्रन्थमें कहीं २ अत्युक्ति है—टीकाकार ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्द्धनानि
किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानि ।
कन्दर्पवर्द्धिनि ! परन्तु सिताज्ययुक्ताद्
दुग्धादृते न मम कोपि मतः प्रयोगः ॥८॥

भा० टी० — हे कामोत्पादिनी ! इस संसार में, सुहावनापन, शरीर की पुष्टि, पराक्रम और वीर्य्य इनकी वृद्धि करनेवाले अनेकों रसायन प्रयोग हैं । रसायन किसे कहते हैं ? यज्जराव्याधिविध्वंसि भेषजं तद्रसायनम् अर्थात् जो बुढापा और व्याधि दोनों को नष्ट कर दे उन्हें रसायन कहते हैं । परन्तु हे प्रिये ! घी और शक्कर से युक्त दूध के सिवाय मैंने दूसरा प्रयोग इतना उत्कृष्ट नहीं देखा । अर्थात् यह बहुत ही श्रेष्ठ है ॥८॥

रसप्रयोगानाह—

अधुना ब्रूमहे सद्यश्चमत्कारकरान् रसान् ।
यतो न नीरसा भाति कविताकुलकामिनी ॥९॥

भा० टी०—हे कामिनी ! अब यहां पर शीघ्र चमत्कार दिखाने वाले आश्चर्य्यजनक जो रस प्रयोग हैं उन्हें लिखेंगे । 'अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः । क्षिप्रमारोग्यदायित्वादौषधेभ्यो रसोऽधिकः ।' रस प्रयोगों की विशेषता यह है कि ये थोड़ी मात्रामें दिए जाते हैं । रोगीको इनसे अरुचि नहीं होती, शीघ्र ही लाभ दिखलाते हैं इसलिये ये बहुत श्रेष्ठ हैं । यहां ग्रन्थकार ने कुछ रस प्रयोगों को लिखा है इसी श्लोक में ग्रन्थकार ने उदाहरण देते हुए बतलाया है कि सुन्दरी और कविता ये दोनों बिना (श्रृंगार आदि) रसके नीरस मालूम पड़ती हैं । इसीलिए इस ग्रन्थ का अपवाद मिटाने के लिये रस प्रयोग लिखते हैं ॥९॥

विश्वतापहरणरसमाह—

पथ्या-कणाऽर्क-विषतिन्दुक-दन्तिबीज-
तिक्ता-त्रिवृद्रसबलीन्सदृशान् विमर्द्य ।
धूर्ताम्बुना सकलवासरमेष सूतः
स्याद्विश्वतापहरणोभिनवज्वरघ्नः ॥१०॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हरड़, पीपल, आक की जड़, शुद्ध कुचला, जमालगोटा, शुद्ध कुटकी, निशोथ, पारद, गन्धक शुद्ध, इन सब पदार्थों को समान लेकर चूर्ण करें। प्रथम पारद गन्धक की कज्जली बना लें फिर सब दवाओं का कपड़ छान कर उसमें मिला दें। इसके पश्चात् धतूरे के पत्तों के स्वरस की १ दिन भावना दे (खरल करें)। इसके पश्चात् सूख जाने पर व्यवहार में लावें। इसको २-२ रत्ती दिन में ३ बार शहद के साथ दे। यह विश्वतापहरण रस सब प्रकार के नवीन ज्वरों को नष्ट करता है ॥१०॥

शीतारिनामरसमाह—

शुल्बं टङ्कण-गन्धकौ च गरलं तुत्थं रसं खर्परं
तालं तुल्यमिदं विमर्द्य घटिकामात्रं सुषेव्यारसैः ।
सूतः स्यात्त्रिपुरारिणा विरचितः शीतारिरित्थं स्मृतो-
ऽजाजीशर्करया युतः प्रशमयेदैकाह्निकादिज्वरम् ॥११॥

भा० टी०—ताम्रभस्म, सुहागा, गन्धक शुद्ध, शुद्ध शृंगिक विष, शुद्ध तुत्थ तथा शुद्ध पारा, शुद्ध खपरिया, शुद्ध हरताल, इन सब को १ घड़ी करेले के रस में खरल करें। यह शीतारि नामक रस शिवजी का विरचित है। इस रस को १ रत्ती की मात्रा में शक्कर और जीरे क चूर्ण के साथ सेवन करने से ऐकाहिक (दिन में एक बार आने वाला), तृतीयक (तिजरिया), चतुर्थक (चौथय्या), सन्तत आदि सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं ॥११॥

कनकसुन्दररसमाह—

मरीच-बलि-हिंगुलैर्गरल-पिप्पली-टङ्कणैः
सुवर्णभवबीजकैः समलवैर्दिनार्धावधिः ।
जयास्वरसमर्दितैः कनकसुन्दरः सुन्दरि !
स्मृतो ग्रहणिका-ज्वरातिसृति-वह्निमान्द्यापहः ॥१२॥

भा० टी०—कालीमिरच, गन्धक, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध विष, पीपल, सुहागा, धतूरे के बीज शुद्ध, इन सबको समान भाग लेकर भाङ्ग के रस में दो पहर तक घोंटे। यह कनकसुन्दररस कहलाता है। इसके सेवन से ग्रहणी, ज्वर, अतिसार, मन्दाग्नि ये सब नष्ट होते हैं ॥१२॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पञ्चामृतपर्पटीरसमाह—

लौहाऽभ्राऽर्क-रसं समं द्विगुणितं गन्धं पचेत्कोलिका-
काष्ठाग्नौ मृदुले निधाय सकलं लोहस्य पात्रे भिषक् ।
सर्वं गोमयमण्डले विनिहिते रम्भादले विन्यसे-
त्तस्योदूर्ध्वं कदलीदलं द्रुततरं वैद्येश्वरो निःक्षिपेत् ।
स्यात्पञ्चामृतपर्पटी ग्रहणिका-यक्ष्माऽतिसार-ज्वर-
स्त्रीरुक्-पाण्डु-गराम्लपित्त-गुदज-क्षुन्मान्द्यविध्वंसिनी
ग्रहण्यामनुपानं च हिङ्गुसैन्धवजीरकम् ।
जीरकं पाण्डुगरयोरितरेषु स्वयुक्तितः ॥१४॥

भा० टी०—लोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, शुद्धपारा, ये सब एक एक तोला, शुद्ध गन्धक दो तोला लेवे । प्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें । पर्पटी के लिये विशेष द्रव्यों से शुद्ध पारद गन्धक की आवश्यकता है । जैसा कि चक्रपाणि ने लिखा है—

जयन्त्या वर्द्धमानस्य आर्द्रकस्वरसेन च ।
वायस्याश्चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रसशोधनम् ॥

अर्थात्—जयन्ती, एरण्ड, अदरख, मकोय, शुद्ध हिंगलोत्थ पारद को, इन द्रव्यों के स्वरस की, भावना क्रम से देकर फिर पर्पटी के लिये व्यवहार में लावें ।

गन्धकमाह—गन्धकं नवनीताख्यं क्षुद्रितं लौहभाजने ।
त्रिधा चण्डातपे शुष्कं भृङ्गराजरसाप्लुतम् ॥
ततो वह्नौ द्रवीभूतं त्वरितं वस्त्रगालितम् ।
यत्नाद् भृङ्गरसे क्षिप्तं पुनः शुष्कं विशुध्यति ॥

गन्धक के छोटे २ टुकड़े कर भांगरे के रस की तीन भावना दें, फिर सुखा कर बारीक पीसलें, इसके पश्चात् गन्धक को लोहे की कलछी में गरम करें, जब गन्धक पिघल जावे तब १ पात्र में भांगरे का स्वरस रख कर ऊपर से घृताक्त वस्त्र बाँध दें । पिघले हुए गन्धकको इसके ऊपर डाल दें । इस प्रकार गन्धक शुद्ध होता है । अस्तु उपरोक्त प्रकार से शुद्ध किया हुआ पारद गन्धक ही लेना चाहिये । इसके पश्चात् लोहेकी कलछीमें

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

भा० टी०—हरड़, पीपल, आक की जड़, शुद्ध कुचला, जमालगोटा, शुद्ध कुटकी, निशोथ, पारद, गन्धक शुद्ध, इन सब पदार्थों को समान लेकर चूर्ण करें । प्रथम पारद गन्धक की कज्जली बना लें फिर सब दवाओं का कपड़ छान कर उसमें मिला दें । इसके पश्चात् धतूरे के पत्तों के स्वरस की १ दिन भावना दे (खरल करें) । इसके पश्चात् सूख जाने पर व्यवहार में लावें । इसको २-२ रत्ती दिन में ३ बार शहद के साथ दे । यह विश्वतापहरण रस सब प्रकार के नवीन ज्वरों को नष्ट करता है ॥१०॥

शीतारिनामरसमाह—

शुल्बं टङ्कण-गन्धकौ च गरलं तुत्थं रसं खर्परं
तालं तुल्यमिदं विमर्द्य घटिकामात्रं सुषेव्यारसैः ।
सूतः स्यात्त्रिपुरारिणा विरचितः शीतारिरित्थं स्मृतो-
ऽजाजीशर्करया युतः प्रशमयेदैकाहिकादिज्वरम् ॥११॥

भा० टी०—ताम्रभस्म, सुहागा, गन्धक शुद्ध, शुद्ध शृंगिक विष, शुद्ध तुत्थ तथा शुद्ध पारा, शुद्ध खपरिया, शुद्ध हरताल, इन सब को १ घड़ी करेले के रस में खरल करें । यह शीतारि नामक रस शिवजी का विरचित है । इस रस को १ रत्ती की मात्रा में शक्कर और जीरे क चूर्ण के साथ सेवन करने से ऐकाहिक (दिन में एक बार आने वाला), तृतीयक (तिजरिया), चतुर्थक (चौथय्या), सन्तत आदि सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं ॥११॥

कनकसुन्दररसमाह—

मरीच-बलि-हिंगुलैर्गरल-पिप्पली-टङ्कणैः
सुवर्णभवबीजकैः समलवैर्दिनार्धावधिः ।
जयास्वरसमर्दितैः कनकसुन्दरः सुन्दरि !
स्मृतो ग्रहणिका-ज्वरातिसृति-वह्निमान्द्यापहः ॥१२॥

भा० टी०—कालीमिरच, गन्धक, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध विष, पीपल, सुहागा, धतूरे के बीज शुद्ध, इन सबको समान भाग लेकर भाङ्ग के रस में दो पहर तक घोंटे । यह कनकसुन्दररस कहलाता है । इसके सेवन से ग्रहणी, ज्वर, अतिसार, मन्दाग्नि ये सब नष्ट होते हैं ॥१२॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

पञ्चामृतपर्पटीरसमाह—

लौहाऽभ्राऽर्क-रसं समं द्विगुणितं गन्धं पचेत्कोलिका-
काष्ठाग्नौ मृदुले निधाय सकलं लोहस्य पात्रे भिषक्।
सर्वं गोमयमण्डले विनिहिते रम्भादले विन्यसे-
त्तस्योद्ध्र्वं कदलीदलं द्रुततरं वैद्येश्वरो निःक्षिपेत्।
स्यात्पञ्चामृतपर्पटी ग्रहणिका-यक्ष्माऽतिसार-ज्वर-
स्त्रीरुक्-पाण्डु-गराम्लपित्त-गुदज-क्षुन्मान्द्यविध्वंसिनी

ग्रहण्यामनुपानं च हिङ्गुसैन्धवजीरकम्।
जीरकं पाण्डुगरयोरितरेषु स्वयुक्तितः ॥१४॥

भा० टी०—लोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, शुद्धपारा, ये सब एक एक तोला, शुद्ध गन्धक दो तोला लेवे। प्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें। पर्पटी के लिये विशेष द्रव्यों से शुद्ध पारद गन्धक की आवश्यकता है। जैसा कि चक्रपाणि ने लिखा है—

जयन्त्या वर्द्धमानस्य आर्द्रकस्वरसेन च।
वायस्याश्चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रसशोधनम् ॥

अर्थात्—जयन्ती, एरण्ड, अदरख, मकोय, शुद्ध हिंगलोत्थ पारद को, इन द्रव्यों के स्वरस की, भावना क्रम से देकर फिर पर्पटी के लिये व्यवहार में लावें।

गन्धकमाह—गन्धकं नवनीताख्यं क्षुद्रितं लौहभाजने।
त्रिधा चण्डातपे शुष्कं भृङ्गाराजरसाप्लुतम् ॥
ततो वह्नौ द्रवीभूतं त्वरितं वस्त्रगालितम्।
यत्नाद् भृङ्गरसे क्षिप्तं पुनः शुष्कं विशुध्यति ॥

गन्धक के छोटे २ टुकड़े कर भांगरे के रस की तीन भावना दें, फिर सुखा कर बारीक पीसलें, इसके पश्चात् गन्धक को लोहे की कलछी में गरम करें, जब गन्धक पिघल जावे तब १ पात्र में भांगरे का स्वरस रख कर ऊपर से घृताक्त वस्त्र बाँध दें। पिघले हुए गन्धकको इसके ऊपर डाल दें। इस प्रकार गन्धक शुद्ध होता है। अस्तु उपरोक्त प्रकार से शुद्ध किया हुआ पारद गन्धक ही लेना चाहिये। इसके पश्चात् लोहेकी कलछीमें

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

थोड़ा घी मिला कर इन द्रव्यों को पिघलावें फिर गोबर से लिपी हुई जमीन पर केले का पत्र रख कर डाल दें ऊपर से दूसरा पत्र रख दें। यह पञ्चामृत पर्पटी नामक रस तैय्यार होता है॥ इसे वैद्य की आज्ञानुसार अनुपान से सेवन करें। इसके सेवन से संग्रहणी, राजयक्ष्मा, अतिसार, ज्वर, प्रदरादि स्त्रियों के रोग, पाण्डुरोग, विष रोग, अम्ल पित्त, अर्श और मन्दाग्नि ये सब रोग नष्ट होते हैं॥१३॥

संग्रहणी रोगमें पर्पटी को हींग और जीरा दोनोंको समान भाग लेकर भून ले फिर उसमें १ भाग सेंधा नमक मिला कर रख लें। इसके अनुपानसे पर्पटी देनेसे शीघ्र लाभ होता है। पाण्डु रोग तथा विष रोगमें भुने जीरेके अनुपानके साथ देना चाहिये। अन्य रोगोंमें वैद्य अपनी युक्ति से दे।१४।

वचा-विश्वा-जीरोषण-गरल-वाह्लीक-दहन-
त्वचां कार्या वट्यश्चणकतुलिता मार्कवरसैः।
यथा भानोर्भासस्तिमिरनिकरं यामिनिभवं
हरन्त्येताः शूलान्यनिलमनलग्लानिमपि च॥१५॥

भा० टी०—वच, सोंठ, जीरा, काली मिरच, मीठा तेलिया, हींग, चित्रक, दालचीनी, इन सब को समान भाग लेकर चूर्ण करलें। पश्चात् भांगरे के रस में चने के समान गोली बनालें। इनके सेवन से वातरोग तथा अग्निमान्द्य उसी प्रकार नष्ट होते हैं जैसे सूर्य की किरणों से रात्रि का अन्धकार नष्ट होता है॥१५॥

समानभागे बलिशूलिवीजे तयोः समानं कनकस्य बीजम्
धत्तूरतैलेन विमर्द्य सम्यग्विलासिनीवल्लभनामधेयः
सूतो भवेद्वल्लयुगप्रमाणः सितायुतो मेहसमूहहारी।
वीर्यस्य बन्धं कुरुते नराणां निहन्ति दर्पं च सुलोचनानाम्

भा० टी०—पारद शुद्ध एक भाग, गन्धक शुद्ध एक भाग, धतूरे के बीज दो भाग, इनको धतूरे के बीजों के तेल के साथ मर्दन करे। यह विलासिनीवल्लभ नामक रस है। इसको छः रत्ती लेकर मिश्री मिलाकर खाने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं। यह वीर्य्य को स्तम्भन करता है, कामिनियों के मद को नष्ट करता है॥१६-१७॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

अनुपानान्याह—

शूले हिंगुघृतान्वितं, मधुयुता कृष्णा पुराणज्वरे,
वाते साज्यरसोनकः, श्वसनके क्षौद्रान्वितं त्र्यूषणम् ।
शीते व्याललतादलं समरिचं, मेहे वरा सोपला,
दोषाणां त्रितयेऽनुपानमुचितं सक्षौद्रमार्द्रोदकम् ॥१८॥
घनपर्पटकं ज्वरे, ग्रहण्यां मथितं हेम,गरे वमीषु लाजाः ।
कुटजोऽतिसृतौ, वृषोस्रपित्ते,गुदकीलेष्वनलः,कृमौ कृमिघ्नः

भा० टी०—अनुपान विधि बतलाते हैं—शूल रोगमें घी के साथ हींग, पुराने ज्वर में शहद के साथ पीपल, वायु के रोगों में लहसुन के साथ घृत, श्वांस में शहद के साथ सोंठ, मिरच, पीपल, इनका चूर्ण, शीताङ्ग में मरिच के चूर्ण के साथ नागरपान, प्रमेह में शर्करा के साथ त्रिफला का चूर्ण, सन्निपात में शहद के साथ अदरख का रस ॥१८॥

ज्वर में नागरमोथे के साथ पित्त पापड़ा, ग्रहणी में बिना जल का मथा हुआ तक्र, विष रोग में सोने का पत्र, वमन में धान की खील, अतीसार में कुटज की छाल,रक्त पित्त रोग में अड़ूसा, बवासीर में चित्रक मूल छाल, क्रिमि रोग में वायविडंग इस प्रकार औषधि के साथ अनुपान की व्यवस्था करनी चाहिये । जिस जगह अनुपान न कहा हो उस जगह शहद लेना चाहिये । शहद योगवाही पदार्थ है जैसी औषधि के साथ मिलेगा वैसा ही लाभ करेगा ॥१८-२६॥

नारायणं भजत रे ! जठरेणयुक्ता
नारायणं भजत रे ! पवनेन युक्ताः ।
नारायणं भजत रे ! भवभीतियुक्ता
नारायणात्परतरं न हि किञ्चिदस्ति ॥२०॥

भा० टी०—उदर रोग से पीड़ित मनुष्य नारायण चूर्ण का सेवन करे । वातरोग से ग्रसित मनुष्य नारायण तैल का अभ्यङ्ग करे । संसार रूपी सागर के दुःखों से पीड़ित मनुष्य को नारायण की आराधना करनी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

चाहिये यही दुनियां के दुःखों को नष्ट कर सकती है। 'नारायण' से अतिरिक्त दूसरी कोई वस्तु नहीं है ॥२०॥

ग्रन्थकारपरिचयः—

आयुर्वेदवचोविचारसमये धन्वन्तरिः केवलं
सीमा गानविदां दिवाकरसुधाम्भोधित्रियामापतिः ।
उत्तंसः कवितावतां मतिमतां भूभृत्सभाभूषणं
कान्तोक्त्याऽकृत वैद्यजीवनमिदं लोलिम्मराजःकविः२१

भा० टी०—लोलिम्मराज नामक कवि ने आयुर्वेद के सार को ग्रहण करते समय केवल धन्वन्तरि के वाक्यों को लेकर ही अपने विचारों को इस ग्रन्थ में प्रकट किया है। साथ ही संगीत शास्त्र में परम निपुण, दिवाकर (लोलिम्मराज के पिता) रूपी अमृत समुद्र के चन्द्रमा, विद्वानों तथा कवियों में परम श्रेष्ठ और राजाओं की सभाके भूषण लोलिम्मराज कविने अपनी प्रियतमाको सम्बोधित करते हुए इस ग्रन्थ रत्नको रचा॥२१॥

इति श्रीमल्लोलिम्मराजकृतौ वैद्यजीवने पञ्चमो विलासः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA